Postal Registration No. CHD/0107/2021-2023 Posted at MBU Chandigarh RNI No. CHABIL/2000/3469

हिन्दी/अंग्रेजी मासिक पत्रिका

दीन बन्धु सर छोटूराम

जाट लहर

जाट सभा, चण्डीगढ़ के सौजन्य से प्रकाशित

वर्ष 23 अंक 02 28 फरवरी, 2023 मूल्य 5 रुपये

प्रधान की कलम से

देश में जनस्वास्थ्य की गंभीर समस्याएं

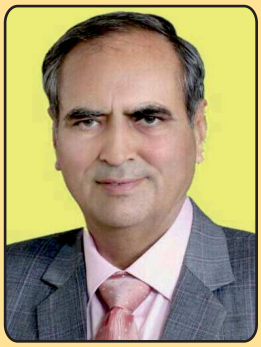

डा. महेन्द्र सिंह मलिक

भारत के अनेक अस्पताल और डॉक्टर गुणवत्तायुक्त इलाज मुहैया कराने के लिए विदेशों में भी प्रसिद्धि हासिल कर रहे हैं लेकिन इसके बावजूद भारत में अब भी स्वास्थ्य सम्बंधी अनेक गंभीर समस्याएं मौजूद हैं। केंद्रीय स्वास्थ्य अन्वेषण ब्यूरो के आंकड़े बताते हैं कि भारत में जीवन प्रत्याशा दुगनी हुई है। शिशु मृत्यु दर महत्वपूर्ण रूप से घटी है। स्मॉल पॉक्स, पोलियो और कुष्ठ रोग लगभग जड़ से खत्म हो गए हैं। मगर भारत की जनता कुपोषण, स्वच्छता और संक्रामक रोगों से अब भी जूझ रही है। पर्यावरण प्रदूषण और जीवन शैली, शराब का सेवन, धूम्रपान, उच्च वसायुक्त खानपान तथा गतिहीन जीवन के कारण देश में मधुमेह, हृदय संबंधी दिक्कतों एवं कैंसर जैसी बीमारियों की दर बढ़ी है। कई सामान्य सी लगने वाली बीमारियां भी महामारी का रूप धारण कर ले रही हैं या व्यापक स्तर पर भारतीय आबादी को प्रभावित कर रही हैं।

संक्रामक बीमारियों मसलन तपेदिक, मलेरिया, काला–अजार, डेंगू बुखार, चिकनगुनिया, जल जनित बीमारियां जैसे हैजा और डायरिया भारत में प्रमुख स्वास्थ्य संबंधी समस्या हैं। भारत में बीमारियों से होने वाली कुल मौतों में एक चौथाई मौतें डायरिया, सांस संबंधी दिक्कत, तपेदिक और मलेरिया के कारण होती हैं। इसके अतिरिक्त अनेक नई बीमारियों जैसे एड्स, इबोला विषाणु, एवियन जुकाम, एच1 एन 1 विषाणु इत्यादि के होने का खतरा हमेशा बना रहता है।

कई राज्यों में कैंसर एक गंभीर समस्या के रूप में सामने आया है। अलग अलग मीडिया रिपोर्टस की मानें तो हरियाणा जैसे छोटे राज्य भी इसका प्रकोप झेल रहे हैं। हरियाणा में पिछले तीन वर्षों में कैंसर की मृत्यु दर में सबसे अधिक वृद्धि दर्ज की गई है। मुंह, स्तन और गर्भाशय ग्रीवा सहित सबसे आम कैंसर के साथ कैंसर रुग्णता और मृत्यु दर के प्रमुख कारणों में से एक है। लोकसभा में केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय द्वारा साझा किए गए आंकड़ों के अनुसार, पंजाब, हरियाणा और हिमाचल प्रदेश में पुरुषों और महिलाओं दोनों में कैंसर के मामलों की सामूहिक अनुमानित घटनाओं में 2020 (76,654) और 2022 (80,450) के बीच 4. 95 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। हरियाणा में कैंसर के 2020 में 29,219 मामलों से बढ़कर 2022 में 30,851 मामले दर्ज किए गए। जनवरी 2022 से अक्तुबर 2022 तक की अधिसूचना के अनुसार केवल हरियाणा में ही टी.बी. के 64437 केस दर्ज किये गये जो कि 2020 में 62697 थे। जबकि पूरे राष्ट्र में अक्तूबर 2022 तक टी.बी. के 2006796 मामले दर्ज हुये जिनमें मृतकों की संख्या 73547 दर्ज की गई। इसी प्रकार राष्ट्रीय कैंसर रजिस्ट्री कार्यक्रम की रिपोर्ट के अनुसार वर्ष 2022 में घातक रोग कैंसर के मरीजों की 1461427 संख्या दर्ज की गई जिनमें 80858 रोगियों की मृत्यु हो गई। अकेले उत्तर प्रदेश से 210958 कैसर रोगी है। इस साल में पंजाब में कैंसर के 2200 मरीज मिले है। कैंसर संस्थान अमृतसर में रोजाना 70–80 कैंसर के मरीज आ रहे है जबकि हजारो लोग नीजि हस्पतालों में ईलाज करवा रहे हैं। हर साल करीब 50 बच्चे टयूमर व कैंसर से पीड़ित हो रहे है। राज्य में मरीजों की संख्या 2020 में 38,636 से बढ़कर 2020 में 40,435 हो गई। हिमाचल में भी इसी अवधि में अनुमानित मामले की संख्या 8,799 से बढ़कर 9,164 हो गई।

डेंगु के मामले भी काफी चिंताजनक है। 2015 में हरियाणा में कुल 9921 मामले डेंगू के सामने आए थे और इनमें से 13 लोगों की मौत हुई थी ये आंकडा बढ़कर अक्टूबर 2021 में 11835 हो गये। जेएनयू में सेंटर ऑफ सोशल मेडिसिन एंड कम्युनिटी हेल्थ में प्रोफेसर रीतू प्रिया के अनुसार अनेक सामाजिक और आर्थिक कारणों से स्वास्थ्य सम्बंधी असमानताओं के रहते भारत लगातार बीमारियों का बोझ ढो रहा है। ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों की समस्या भिन्न हैं। जहां शहरों में खराब जीवन शैली के चलते हृदय, यकृत व गुर्दा रोग असमय ही युवा वर्ग को भी बेहद तेजी से अपनी गिरफ्त में ले रहे हैं। वहीं ग्रामीण क्षेत्रों में संक्रामक बीमारियां का प्रभाव कायम है।

देश में दिल की बीमारियों को ही लें तो आप हालात जानकार हैरान हो जाएंगे। विश्व स्वास्थ्य संगठन के मुताबिक, दुनिया भर में खासकर युवा तबके में दिल से संबंधित बीमारियों से होने वाली 1.79 करोड़ मौतों में से 20 फीसदी भारत में ही हो रही है। इंडियन हार्ट एसोसिएशन के आंकड़ों के मुताबिक, भारत में दिल के दौरे से मरने वालों में 10 में से चार की उम्र 45 साल से कम है। 10 साल में भारत में हार्ट अटैक से होने वाली मौतें करीब 75 फीसदी तक बढ़ गई है। विशेषज्ञों का कहना है कि 40 साल से कम उम्र के 25 फीसदी और 50 साल से कम उम्र के 50 फीसदी लोगों को हार्ट अटैक का खतरा है। पहले दिल का दौरा पड़ने के मामले 60 साल से ज्यादा उम्र के लोगों में देखे जाते थे, लेकिन अब 18 साल से कम उम्र के लोग भी सडेन कार्डियक अरेस्ट की वजह से अपनी जान गंवा रहे हैं।

शेष पेज–2 पर

शेष पेज–1

बीते एक साल के दौरान बॉलीवुड से जुड़ी कई प्रमुख हस्तियों की कम उम्र में ही दिल की बीमारी के चलते अचानक मौत हो चुकी है। दुनिया में हर 1 लाख जनसंख्या पर 235 लोगों को हृदय रोग होते हैं पर भारत में 272 को यह बीमारी होती है।

भारत में अब तक तीसरी दुनिया की कही जाने वाली अनेक बीमारियां व्याप्त हैं, जो काफी पहले ही विकसित देशों से विलुप्त हो चुकी हैं। भारतीय आबादी का बड़ा हिस्सा बीमारियों से जूझता है और अस्पतालों में लंबी कतारों के साथ सुविधाओं का अभाव है। जहां अनेक परीक्षण उपकरण पुराने पड़ गए हैं। अपने देश में अस्पतालों और डॉक्टरों की उपलब्ध ाता जनसंख्या के घनत्व के हिसाब से कम है और सरकारी अस्पतालों में स्वास्थ्य सुविधाओं, आधारभूत संरचना, चिकित्सकों, कमरों, दवाइयों, कुशल व प्रशिक्षित नर्सिंग स्टाफ एवं अन्य सुविधाओं की कमी है।

आंकडों को देखें तो भारत में 7,54,724 बिस्तरों वाले कुल 19,653 सरकारी अस्पताल हैं। इनमें ग्रामीण क्षेत्र में 15,818 अस्पताल और शहरी क्षेत्र में 3,835 अस्पताल हैं। भारत की 70 प्रतिशत जनसंख्या गांवों में रहती है जिनके इलाज के लिए लगभग 1,53,655 स्वास्थ्य उप केंद्र 25,308 प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र और 5,396 सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र हैं। इन्हीं आभावों के चलते अपने देश में निजी स्वास्थ्य क्षेत्र को विस्तार करने का मौका मिल गया जिसका गरीब लोगों से कोई वास्ता नहीं। निजी क्षेत्र के स्वास्थ्य सेवाओं को अभिजात्य समाज के लिए खड़ा किया गया। ऐसी जगहों पर गरीब दिखाई भी नहीं दे सकता है। कई बार तो लगता है कि सरकार जानबूझकर सरकारी क्षेत्र के स्वास्थ्य सेवाओं को कमजोर कर रही है ताकि रसूखदार लोगों को इस क्षेत्र में अपना कारोबार विस्तार करने का मौका मिल पाए।

असमय और अकाल मौतों का डेटा भी बहुत परेशान करने वाला है। 2023 में ही प्रकाशित एक ताजा मीडिया रिपोर्ट को देखें तो कोहरे के कारण हुए सड़क हादसों में प्रतिदिन औसतन 14 लोगों की मौत हो जाती है। सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय द्वारा संकलित एक रिपोर्ट ''भारत में सड़क दुर्घटनाएँ 21'' के अनुसार, पिछले सात वर्षों में कोहरे के कारण कुल 7,994 सड़क दुर्घटनाएँ दर्ज की गईं। इसमें 5,740 लोगों की मौत हुई और 4,322 लोग गंभीर या मामूली रूप से घायल हुए। 2014 और 2021 के बीच वर्ष–वार ब्रेक–अप में, 2017 में सबसे अधिक दुर्घटनाएं (1,244) और मौतें (866) हुईं, इसके बाद 2018 में 1,177 दुर्घटनाएं और 912 मौतें हुईं।

वर्ष 2022 में नवम्बर मास तक 11 महीनों के दौरा हरियाणा में विभिन्न 9951 सड़क दुर्घटनाओं में 4516 व्यक्ति जान गवां बैठे जिनमें अधिकतर दुर्घटनाऐं अम्बाला–सोनीपत राष्ट्रीय राजमार्ग पर हुई यानि 13 व्यक्ति प्रतिदिन सड़क दुर्घटनाओं में मारे गये जबकि 8447 व्यक्ति जख्मी हो गये। एन सी आर बी की रिपोर्ट के मुताबिक केवल वर्ष 2021 में 1 लाख 5 हजार से अधिक व्यक्ति सड़क दुर्घटनाओं का शिकार हुये जिनमें 1.9 प्रतिशत मृत्यु ड्रग/एल्कोहल के सेवन से वाहन चलाने व 90 प्रतिशत ओवर स्पीड/ओवर टेकिंग के कारण हुई। मासिक क्रिमीनल गजेट की रिपोर्ट के अनुसार हरियाणाा में प्रति वर्ष लगभग 14000 व्यक्ति गुम हो जाते है यानि 40 व्यक्ति हर रोज गायब होते है जिसका जनहित के प्रति प्रशासनिक अव्यवस्था मुख्य कारण है। हरियाणा पुलिस के क्राईम रिकार्ड ब्यूरों के अनुसार 1 जनवरी से 31 अगस्त 2022 के बीच केवल 8 महीने में राज्य में 94920 व्यक्तियों की गुमशुदा की रिर्पोट दर्ज की गई।

असल में भारत की स्वास्थ्य सेवा प्रणाली जटिल और बहुआयामी है, जहाँ सरकारी और निजी दोनों ही सुविधाएँ देश की 1.3 बिलियन से अधिक आबादी को चिकित्सा सेवाएँ प्रदान कर रही हैं वहीं इसको तेजी से बढाने की जरूरत है। सरकार ने देश की ग्रामीण आबादी के लिये स्वास्थ्य सेवा तक पहुँच में सुधार के लिये कई पहलों की शुरुआत की है, जैसे 'आयुष्मान भारत' योजना, जिसका उद्देश्य 500 मिलियन से अधिक लोगों को स्वास्थ्य कवरेज प्रदान करना है लेकिन जमीनी स्तर पर अभी बहुत काम किए जाने की जरूरत है।

भारत एशिया और पश्चिम के समकक्ष देशों की तुलना में लागत प्रतिस्पर्द्धी भी है। भारत में सर्जरी की लागत अमेरिका या पश्चिमी यूरोप की तुलना में लगभग दसवें भाग तक कम है। एक बड़ी आबादी, एक सुदृढ़ फार्मा क्षेत्र एवं चिकित्सा आपूर्ति शृंखला, 750 मिलियन से अधिक स्मार्टफोन उपयोगकर्ता, वेंचर कैपिटल फंड तक आसान पहुँच के साथ विश्व स्तर पर तीसरा सबसे बड़ा स्टार्ट–अप पूल तथा वैश्विक स्वास्थ्य देखभाल समस्याओं के समाधान पर केंद्रित नवोन्मेषी टेक उद्यमियों के साथ भारत के पास वे सभी आवश्यक घटक मौजूद हैं जो इस क्षेत्र की घातीय वृद्धि में योगदान कर सकते हैं।

'नेशनल हेल्थ प्रोफाइल' के अनुसार, भारत में प्रति 1000 जनसंख्या पर केवल 0.9 बेड उपलब्ध हैं और इनमें से

केवल 30 प्रतिशत ही ग्रामीण क्षेत्रों में उपलब्ध हैं। भारत में प्रदान की जाने वाली स्वास्थ्य देखभाल की गुणवत्ता में व्याप्त भिन्नता भी है (ग्रामीण क्षेत्रों में अपर्याप्त सुविधाएँ एवं संसाधन) और कमजोर विनियमन के कारण कुछ निजी स्वास्थ्य सुविधाओं में खराब देखभाल सेवा प्रदान की जाती है। भारत में मधुमेह, कैंसर और हृदय रोग जैसी गंभीर बीमारियों की उच्च दर के साथ भारत में सभी मौतों में से 60 प्रतिशत से अधिक के लिये गैर–संचारी रोग जिम्मेदार हैं। पर्याप्त मानसिक स्वास्थ्य देखभाल के अभाव से भारत में प्रति व्यक्ति मानसिक स्वास्थ्य देखभाल पेशेवरों की संख्या सबसे कम है। मानसिक स्वास्थ्य पर सरकार का व्यय भी अत्यंत कम है। इसके परिणामस्वरूप खराब मानसिक स्वास्थ्य परिणाम और मानसिक बीमारी से पीड़ित लोगों की अपर्याप्त देखभाल की स्थिति बनी है।

भारत में सबसे गंभीर चिंताओं में से एक है चिकित्सक–रोगी अनुपात में अंतराल। 'इंडियन जर्नल ऑफ पब्लिक हेल्थ' के अनुसार भारत को वर्ष 2030 तक 20 लाख चिकित्सकों की आवश्यकता होगी। वर्तमान में सरकारी अस्पतालों में 11000 से अधिक रोगियों पर एक चिकित्सक की सेवा उपलब्ध है। भारत में फिलहाल राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन, आयुष्मान भारत, प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना, राष्ट्रीय चिकित्सा आयोग, प्रधानमंत्री राष्ट्रीय डायलिसिस कार्यक्रम, जननी शिशु सुरक्षा कार्यक्रम, राष्ट्रीय बाल स्वास्थ्य कार्यक्रम जैसे कार्यक्रम लागू हैं लेकिन आगे की राह अब भी धंधुली है और काफी काम करने की जरूरत है।

नई स्वास्थ्य सुविधाओं के निर्माण और मौजूदा सुविधाओं के उन्नयन के साथ–साथ चिकित्सा अनुसंधान एवं स्वास्थ्य सेवाओं के लिये वित्तपोषण (जो वर्तमान में सकल घरेलू उत्पाद का 2.1 प्रतिशत है) में वृद्धि की आवश्यकता है। इसके साथ ही स्वास्थ्यकर्मियों की संख्या बढ़ाने की आवश्यकता है। इसके अंतर्गत मेडिकल स्कूलों और प्रशिक्षण कार्यक्रमों की संख्या में वृद्धि करना शामिल है, साथ ही स्वास्थ्य पेशेवरों को सेवा की कमी वाले क्षेत्रों में कार्य करने हेतु प्रोत्साहित करने के लिये वित्तीय प्रोत्साहन की पेशकश करना भी शामिल है।

निर्धनों, अनुसूचित जाति के सदस्यों और विशेष रूप से महिलाओं के लिये स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुँच बढ़ाने के साथ–साथ इन समुदायों को स्वास्थ्य सेवा के बारे में शिक्षा एवं जानकारी प्रदान करने के लिये लक्षित कार्यक्रमों को समयबद्ध रूप से लागू करने की आवश्यकता है। इसके साथ ही, विनियमनों को प्रवर्तित करने, गुणवत्ता नियंत्रण उपायों को लागू करने, पारदर्शिता बढ़ाने और स्वास्थ्य देखभाल कार्यक्रमों की लेखापरीक्षा करने की भी आवश्यकता है। इसमें मानसिक स्वास्थ्य सेवाओं के लिये वित्तपोषण में वृद्धि, मानसिक स्वास्थ्य के मुद्दों को बेहतर ढंग से संबोधित करने के लिये स्वास्थ्य कर्मियों को प्रशिक्षित करना और मानसिक रोगों से जुड़े सामाजिक कलंक को समाप्त करना शामिल है। स्वास्थ्य देखभाल प्रणाली को स्वास्थ्य के सामाजिक निर्धारकों को संबोधित करने और समग्र स्वास्थ्य असमानताओं को कम करने के लिये शिक्षा, आवास एवं स्वच्छता जैसे अन्य क्षेत्रों के साथ समन्वय में काम करना चाहिये।

डॉ० महेन्द्र सिंह मलिक, आई.पी.एस. (सेवा निवृत)
पूर्व पुलिस महा निदेशक हरियाणा,
प्रधान अखिल भारतीय शहीद सम्मान संघर्ष समिति व
जाट सभा, चंडीगढ़ व पंचकूला एवं
चेयरमैन, चौ० छोटूराम सेवा सदन, कटरा, जम्मू

जाट भारतीय है

– जयपाल सिंह पूनियां, एम.ए.इतिहास
एच.एफ.एस (सेवानिवृत)

जाट आदिकाल से ही भारतीय हैं क्योंकि यह सिन्धुघाटी की सभ्यता में मिले साक्ष्यों से सिद्ध हो चुका है। बाल्मिकी रामायण में लिखित जाट वंशों में पहल्व, शक आदि बरबर जातियां जाट वंशों ने वशिष्ठ ऋषि की ओर से विश्वामित्र की सेना के साथ घोर युद्ध किया। बालकांड सर्ग (54) उस समय में जाट जनपद विदेह, मालवैन, मगध, पुड्र, दशरण, विदर्भ, ऋषिक, वंग, मत्स्या, आन्ध्र, चोल, पाड्य, नाग, वैन, भोगवतीपुर, वाहिक, कुरू, सुसेन, भद्र, शक, दरद, सिन्धू इत्यादि थे। इसके अलावा विस्तार से विवरण देने की आवश्यकता नहीं हैं क्योंकि सिन्धुघाटी की सभ्यता से जाटों की उत्पति के बारे में पूर्ण रूप से सिद्ध हो चुका है कि जाट भारतीय हैं और जाटों की उत्पति से यह भी सिद्ध हो चुका है कि महाराज दशरथ, रघु महाराज के प्रपौत्र थे और रघुवंशी जाट कहलाये। ये सूयवंशी जाट थे और उनकी तीन रानियों से चार पुत्र पैदा हुये। रामचन्द्र, भरत, लक्ष्मण और शत्रुघन। ये सभी जाट थे। भगवान राम के पुत्र लव ने लवपुर (लाहौर) बसाया था और उसी से लाम्बा गोत्र चला।

दुसरे पुत्र कुश से कुशवाहा गोत्र चला। इस गोत्र में जाट के इलावा राजपूत भी आते हैं क्योंकि रजपूतों की उत्पति भी 12वीं शताब्दी में जाटों से ही हुई थी।

12वीं शताब्दी के अन्त तक 1176 ई. में दिल्ली के सम्राट अनंगपाल तोमर वंशी जाट राजा थे। तोमर वंश के जाटों के मेरठ और बागपत में सैंकड़ों गांव आज भी हैं जो कहते है कि हमारे तोमरवंश के पूर्वज जाट राजाओं ने लगभग 100 वर्ष तक दिल्ली पर राज किया। दिल्ली की सारी भूमि पहले जाटों की ही होती थी और दिल्ली को बसाने में जाटों का ही महत्वपूर्ण योगदान है। तोमर वंश के आखरी सम्राट अनंगपाल तोमर के केवल 2 लड़की ही थी। जिसमें बड़ी लड़की कन्नौज के राजा जयचन्द की मां थी और छोटी लड़की अजमेर के राजा पृथ्वीराज चौहान की मां थी। सम्राट अनंगपाल तोमर के कोई पुत्र नहीं था। अपने दोहते पृथ्वीराज चौहान को ही उसने अपना उत्तराधिकारी बनाया था और वृद्ध होने पर सन् 1176 ई. में पृथ्वीराज चौहान को दिल्ली का सिंहासन सौंप दिया था। जिसने 1192 ई. में मोहम्मद गौरी के हाथों हार कर दिल्ली का राज गंवा दिया था। महाभारत युद्ध के बाद युधिष्टिर महाराज से लेकर जाट वंश के राजाओं का शासन काल 1871 वर्ष तक रहा यानि 3100 वर्ष ईसा. पूर्व से 1229 वर्ष ईसा. पूर्व तक रहा; युधिष्ठिर संवत् का अंतर आज के सन् 2005 से लगभग 3100 वर्ष तक का है। इसके बाद दूसरे जाट खानदान के 14 राजाओं का राज्य 1229 ईसा. पूर्व से 729 ईसा. पूर्व तक 500 वर्ष रहां। इसके पश्चात ढ़िल्लो गोत्र के 16 जाट राजाओं का राज्य 729 ईसा. पूर्व से 284 ईसा. पूर्व तक 445 वर्षों तक रहा। इसी दौरान मगध पर नन्दवंश और मौर्य वंशों ने भी राज किया। ये सभी जाट वंश थे। इनमें सबसे शक्तिशाली सम्राट महान अशोक था जिसका इतिहास में आज भी शौर्य पूर्ण तथ्यों सहित उल्लेख मिलता है। इन दोनों खानदानों ने 184 ईसा. पूर्व तक राज किया। 102 ईसा. पूर्व उज्जैन के सम्राट गंधर्वसेन/मोहिंद्रादित्य के पुत्र व भ्रतृहरि के छोटे भाई चक्रवर्ती सम्राट विक्रमादित्य पैदा हुए, जिन्होंने 16 वर्ष की आयु में भ्रतृहरि की रानी पिंघला द्वारा भ्रतृहरि के साथ बेवफाई करने उपरान्त अपने छोटे भाई विक्रमादित्य को राज सौंप कर वैराग्य धारण कर लिया था। इनका बचपन का नाम विक्रमसैन था ये बड़े पराक्रमी और न्याय प्रिय राजा थे। इन्होंने ईसा. पूर्व 57 में जब शकों को हराया था वे 45 वर्ष के थे। ये पंवार गोत्र के जाट राजा थे।

इन्होंने उसी समय 57 ईसा. पूर्व विक्रमी समंवत नामक देसी कलैन्डर चलाया जो कि आज भी भारत वर्ष की संस्कृति में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है। मध्यप्रदेश के मालवा क्षेत्र में 10 जिलों में आज भी जाटों की आबादी बहुसंख्यक हैं। इनमें उज्जैन, इन्दौर, देवास, साजापुर, धार, मंदसौर, निमच, सागर और अशोक नगर प्रमुख हैं। इनमें पंवार गोत्र के जाटों की संख्या ज्यादा है। ये बड़े शूरवीर सम्राट थे। चक्रवर्ती सम्राट विक्रमादित्य पंवार ने 96 देशों पर राज किया। उनका आधिपत्य स्वीकार ने करने पर ये रोम के सम्राट जुलियस सीजर को रोम से बन्दी बना कर लाये थे और उज्जैन की सड़को पर नंगे पैरो घुमाया था। इनका राज भारत के इलावा एशिया के पूर्वी देशों के अतिरिक्त मिश्र, अरब, यूरोप, मध्य एशिया तक फैला हुआ था। इन्होंने मक्का में बौध धर्म की 360 मुर्तियों लगवाई थी जो कि इस्लाम आने पर अधर्मी बादशाहों द्वारा तुड़वा दी गई थीं। जैसे 2001 में अफगानिस्तान में तालिबान राज आने पर बौध धर्म की विश्व की सबसे बड़ी मुर्ति भी तुड़वा दी थी जो कि पहाड़ी की चट्टान काट कर बनवाई गई थी। जाट दा अन्सियेन्ट रूलर डॉ. बी.एस. दहिया पेज 80 और 144 एन्टीक्यूटी ऑफ जाटस पेज 15, 18, श्री उजागर सिंह माहिल, जाटों का उत्कृष्ट पेज 343–44 द्वारा योगेन्द्र पाल शास्त्री व लेखक भी इससे सहमत है।

महाभारत के बाद धर्म युधिष्ठिर के साथ कई हजारों की संख्या में क्षत्रिय लोग पलायन करके विदेशों में जा बसे और वहां पर उन्होंने राज स्थापित किए। ये सभी विभिन्न गोत्रों के जाट क्षत्रिय ही थे। ये सभी समस्त यूरोप, अरब, मध्य एशिया, रूस, चीन, स्कैन्डनविया, ब्रिटेन आदि क्षेत्रों में फैल गए और वहीं के होकर रह गए। इसके बारे में विदेशी इतिहासकारों ने इसके तथ्यों सहित उदाहरण दिए हैं जिनमें हैरोडोटस, मैक्समूलर तथा कर्नल जेम्स टॉड मुख्य रूप से हैं। भारत का इतिहास विश्व में सबसे प्राचीनतम इतिहास है क्योंकि सिन्धू घाटी की ही सभ्यता ही हमारी विशेष पहचान है। सिन्धू घाटी की सभ्यता के बाद ही मिश्र और मैसोपोटामिया की सभ्यताओं का विकास हुआ था। जाटों ने कभी अपना इतिहास नहीं लिखा क्योंकि जाट केवल इतिहास कायम करने में ही विश्वास रखते थे। यदि जाट अपना इतिहास लिखते तो विश्व में सबसे स्वर्णीम इतिहास जाटों का ही होता। जाट हमेशा पोपलीलाओं के विरूद्ध रहे, जिससे मनुवारी उनसे जलने लगे और जाटों को हमेशा नीचा दिखाने में ही लगे रहे और जाटों का इतिहास नहीं लिखा। अंग्रेज भी अपना इतिहास हमेशा रिश्वत देकर लिखवाते थे। यहां तक कि मनुवादियों ने और कुछ यूरोपियन लोगों ने वेदों की व्याख्या गलत कर दी जोकि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने सत्यार्थ प्रकाश में अनेकों उदाहरण देकर समझाया कि वेद सनातन उत्तम है। फिर भी कुछ इतिहासकारों ने जाटों का इतिहास लिखा और आज तक उसे जिंदा रखा। हमारे देश के राजनेताओं ने हमारे इतिहास की सुध नहीं ली क्योंकि मुगलों का इतिहास आज तक पढ़ाया जा रहा है और मुगलों को ही महान बताने में लगे रहते है। इनमें से कुछ इतिहासकार जैसे जे.पी. जायसवाल, डॉ. विद्याधर महाजन, हैरोडोटस, मैक्समूलर, कर्नल जेम्स टॉड, ठाकुर देशराज, प्रमेश शर्मा, मिस्टर नेसफील्ड, पं. लेखराम जी, योगेन्द्रपाल शास्त्री, डॉ. बी.एस. दहिया, कैप्टन दलीप सिंह अहलावत, कैप्टन राम स्वरूप जून, चौ.

भलेराम बैनीवाल, कनिंघम, एम. इलियट, रिसले, डॉ. सरकार, डॉ. प्रकाशचन्द चुन्डावत इब्बेटसन, एम.सी. प्रधान, कानूनगो, डॉ. ट्रम्प, बीम्स, मि. सर हेनरी, अंग्रेजो के गजेटियर और स्वामी दयानन्द सरस्वती जी प्रमुख रूप से जिन्होंने ने जाटों का इतिहास लिखा और इसमें अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। संसार की सभी सभ्यताओं में हमारी सभ्यता प्राचीनतम है। जाट आदिकाल से ही मेहनत कश और पराक्रमी रहा है जिन्होंने बंजर भूमि को उपजाऊ बनाया और बाहरी हमलावरों से देश की रक्षा की। भारत की रक्षा करने में प्राचीन समय में जाटों के इलावा इनके साथ और किसी भी जाति का कोई योगदान नहीं रहा। जाट भारत से ही बाहर गए थे न कि बाहर से यहाँ आए क्योंकि जाट की आर्य है, और क्षत्रिय है। यह प्राचीन इतिहासिक ग्रन्थों से सिद्ध हो चुका है।

हिसार के गांव राखी गढ़ी की खुदाई में यह सिद्ध हो चुका हैं कि यह गांव सिन्धु घाटी की सभ्यता के समय ही विकसित हुआ। उस समय के काफी बड़े शहरों में इसकी गिनती रही है। आर्य क्षत्रियों का मूल निवास स्थान भारत ही रहा है और बौद्धिक काल से महाभारत काल तक इनका भारत एवं संसार के अनेक देशों पर चक्रवर्ती शासन रहा और प्रमाणों से सिद्ध हो चुका है जाट आर्य हैं और भारतीय हैं।

यूरोप तथा एशिया के कई देशों में जाट शब्द से मिलते जुलते गाथ, गेटी, मैसेगेटाई (महाजट्ट), जुटी, जथरा, युची, यति, जरित्का आदि शब्दों को देखकर विदेशी इतिहासकारों ने जिनमें हैरोडोटस, स्ट्रेबों, कनिघंम, कर्नल टॉड और ग्राउस शामिल हैं। इन शब्दों के आधार पर यह साबित करने को चेष्टा की है कि जाट अवश्य ही इन जातियों के उत्तराधिकारी रहें होंगे जोकि विदेशों से आकर भारत में बस गए है। कुछ लोग आक्सस घाटी के किनारे से कुछ सिंथिया से कुछ बैक्ट्रीया से और कुछ स्कैन्डविया से आया हुआ बताते हैं। मेजर बिगले सिखते हैं कि ईसा. से पूर्व पहली और दूसरी शताब्दी में जाट लोग आक्सस के किनारे से चलकर अफगानिस्तान के रास्ते से भारत आए। इनका जोरदार खंडन करते हुए नि. नेशफील्ड सर हर्वट रिजले, डॉ. ट्रम्प, वीक्स और अनेक अरबी इतिहासकारों ने भी जाटों को भारतीय ही बताया। देसी इतिहासकार श्री चिन्तामणि वैद्य ने तो बड़े ठोस प्रमाणों के साथ यूरोपीयन इतिहासों के कथन का जोरदार खंडन किया है। उन्होंने लिखा है कि ''न तो किसी विदेशी इतिहास में ऐसा वर्णन किया है कि जाट फलॉदेश से भारत में आए और न ही जाटों का दंत कथाओं में ऐसा पाया जाता है'', पंडित इंद्र विद्या वाचस्पति ने कहा ''मुगल साम्राज्य का उदय और उनके कारण नामक पुस्तक में भी यही लिखते हैं कि जब से जाटों का वर्णन मिलता है वह भारतीय ही है यदि भारत के बाहर कहीं भी उनके निशान मिलते हैं तो वह भारतीय ही है और भारत से ही बाहर गए हैं ऐसे प्रमाण मिलते हैं''। दूसरी बात में वह लिखते हैं कि गाथ, गेटी, जूटी, यूची आदि समूह जिनके यूरोप और चीन में निशान पाए जाते हैं, वे उन जाटों के वंशज हैं जो कि किन्ही परिस्थितियों के कारण भारत से बाहर गए थे और बाहर जाकर उन्होंने राज्य स्थापित कर लिए थे। इस बात के विदेशी साहित्यों में भी प्रमाण भरे पड़े हैं कि भारतीय क्षत्रिए जाटों ने यहां से बाहर जाकर राज्य स्थापित किए हैं। कर्नल जेम्स टॉड ने स्कंद नाभ में जाटों की बस्तियों का उल्लेख किया है। स्कंदनाभ में जबसे जाटों का प्रवेश होने का उल्लेख मिलता है, उससे कई शताब्दियों पहले भारत में जाटों के होने का प्रमाण पाया है। जाट भारत से ही बाहर गए। ईसा. से कई सौ वर्ष पूर्व गए और कई सौ वर्ष बाद तक जाते रहे। कर्नल टॉड ने कहा कि जाट इंडो–सिन्थियन कुल के हैं। जोकि ईसा. से एक सदी पहले अपने निवास स्थान आक्सस घाटी से पंजाब में प्रवेश कर गए थे। कनिंघम, इब्बेटसन, विसेंट और स्मिथ भी इसका समर्थन करते हैं। लेकिन कैंपबैल और जैक्सन इन्हें कुषाण और यूची जाति से सम्बंधित बताते हैं। डॉक्टर ट्रिंप तथा बीन्स ने शारीरिक बनावट तथा भाषा के आधार पर जाटों को इंडो आर्यन वंशज होने का दावा किया है। डॉक्टर मिलर ने जाटों को सिथियन बताने वालो का खण्डन किया है और कहां है की जाट निःसन्देह आर्य वंशज हैं क्योंकि जो जाटों की भाषा है वही आर्यों की थी यदि जाट सिंथियन होते तो उनकी सिंथियन भाषा कहा गई। ऐसा कैसे हो सकता है कि अब आर्य भाषा को जो कि हिंदी में एक शाखा है, वही शताब्दीयों से ही बोलते चले आए हैं।

बैक्ट्रिया, हरकानिया तथा खुरासानिया के मध्य मारसंग नदी के किनारों के साथ एक बहुत बड़ा उपजाऊ प्रदेश है। यहां के निवासी जिट्टी (जाट) लोगों का वर्णन करते हुए प्लेटोमी और पिल्नी कहते हैं कि जाटों की यही आदि भूमि है। यदि यह दोनों ही युनानी लेखक भारत आए होते तो उन्हें डॉक्टर ट्रिम्प कि राय मानने पर मजबूर होना पड़ता और साथ में यह भी मानना पड़ता कि भारत से बाहरी जाट भारत से ही गये हुए हैं जो कि भारत से बाहर प्रजातंत्र राज्य स्थापित करने के लिए यहां आए हैं। ये प्रदेश उन जाटों के नाम से जाटालि प्रसिद्ध हुआ क्योंकि तब हुणो और शक–सिथिंयनों के आक्रमणों का कोई नामोनिशान नहीं था। उस समय भी जाट भारत में आबाद थे क्योंकि उनके आक्रमणों से काफी समय पहले जाट लोग सिंध प्रांत में आबाद थे, जिनका संबंध महाभारत के योद्धाओं से था महाभारत के बाद जब सम्राट युधिष्ठिर अपने पोते परिक्षित को अपना उत्तराधिकारी बनाकर इसे राज्य सौंप कर हिमालय की तरफ गए तो उनके साथ कई हजारो की संख्या में लोग यहां से गए थे जिन्होंने बाहर जाकर अपनी बस्तियां बसाई और अपने–अपने प्रजातंत्र राज्य भी स्थापित कर लिए थे।

हुणों और शक–सिथिंयनों के आक्रमणों से पहले ही भारत में जाटों के कई बड़े–बड़े राज्य थे जिनमे अमरकोट में

सम्राट पोरस, तक्षशिला का राजा अम्मी, बलोचिस्तान, अफगानिस्तान, मगध में नंदवंश आदि। इसके बाद चंद्रगुप्त मौर्य और उसका वंश था तथा ईशा पूर्व दूसरी शताब्दी में उज्जैन में राजा महिंद्रादित्य व उनके पुत्र भ्रतरीहरि और उसके बाद सम्राट विक्रमादित्य पंवार गोत्र जाट वंशज जिन्होंने 57 ईसा पूर्व 45 वर्ष की आयु में शंकों को हराया था और विक्रमी संवत् नामक देसी कैलेंडर चलाया था। इससे पहले भारत पर शको द्वारा इतिहास में कोई भी हमला किया नहीं पाया जाता। सम्राट विक्रमादित्य ने उज्जैन पर शासन करते हुए पूर्ण भारतवर्ष सहित 96 देशों पर राज किया था। कर्नल जैम्स टॉड ने भी सम्राट विक्रमादित्य को पंवार गोत्र का जाट बताया है।

इसके बाद भारत पर कुषाण वंश ने लगभग 200 वर्ष तक भारत पर राज किया। ये भी कासवां गोत्र के जाट शासक थे। इनमें सबसे शक्तिशाली सम्राट कनिष्क थे। जिन्होंने भारत पर 40 वर्षों तक राज किया। इसके बाद गुप्त वंश के जाट राजाओं ने लगभग 450 वर्ष तक मगध पर राज किया जिसमें सम्राट समुद्रगुप्त सबसे शक्तिशाली रहे। यह धारण गोत्र के जाट थे। इनके समय में भारतवर्ष को विदेशों में सोने की चिड़िया कहा गया था क्योंकि इनके समय में भारत के अलावा दूसरे देशों से भी टैक्स वसूली आती थी। इसके बाद बैंस गोत्र का शासन रहा जिन्होंने भारत पर लगभग 150 वर्षों तक शासन किया। इनमें सम्राट हर्षवर्धन सबसे ज्यादा शक्तिशाली रहे। इन्होंने भारत का वैभव दूर–दूर तक फैलाया और पंचायत प्रणाली का गठन भी इन्होंने किया। महाराजा युधिष्ठिर से सम्राट हर्षवर्धन तक जाटों का स्वर्ण युग कहा जाता है।

हर्षवर्धन की मृत्यु के बाद कन्नौज में यशोवर्मन शासक बना। यह विर्क गोत्र का जाट शासक था। इस समय बिहार, बंगाल, कश्मीर, सिंध आदि सभी जगह जाट वंशों का शासन था। मध्य भारत पर उज्जैन में पंवार गोत्र का शासन था। सातवीं शताब्दी से लेकर 12वीं शताब्दी तक विभिन्न क्षेत्रों में भारत पर जाटों का शासन रहा। इनमें दिल्ली, मगध, बंगाल, उज्जैन, सिंध, पंजाब आदि मुख्य रूप से राज्य रहे हैं। दिल्ली में तोमर वंश ने 100 वर्ष तक राज किया। इनका आखिरी शासक सम्राट अनंगपाल तोमर थे और उज्जैन में 11वीं व 12वीं शताब्दी में भी पंवार गोत्र के जाट शासकों ने ही राज किया जिनमें राजा भोज पंवार तथा श्री जगदेव सिंह पंवार जैसे शक्तिशाली शासक सिद्ध हुए। दक्षिणी भारत में भी अहलावत, पहलव व चोल जाट वंशों का शासन रहा। इस तरह से सारे भारत पर 12वीं शताब्दी तक जाटों का ही शासन रहा। इनमें मान, मौर्य, कंग, नेहरा, दहिया, बालन, सिंधु, जाखड़, सिहाग/सुहाग, काकवंश, महला, बेनीवाल, गोदारा, पुनिया, पंवार, बांगर, सारन, मलिक, तक्षक, कासवां, गौर, सांगवान, नागल, सोलंकी, चंदेला, वत्स, चौहान, तोमर, ढिल्लो, सिनसिनवार आदि गोत्रों ने समय–समय पर भारतवर्ष पर राज किया। इन सभी शासनाध्यक्षों के जाट होने के कई इतिहासकारों ने उदाहरण दिए हैं।

जाटों के भारतीय मूल के निवासी होने के कुछ और महत्त्वपूर्ण उदाहरण निम्न प्रकार से दिए जाते हैं :–

1. टॉड 1/52 जनरल कनिंघम के विचार से बयाना और भरतपुर के हिंदू जाटों की परंपरा कंधार को अपना पैतृक स्थान मानती है, जबकी मुसलमान जाट प्रायः गजनी बतलाते हैं।

2. क्रुक का कहना है कि मथुरा के जाट बयाना से हिसार और वहां से यमुना के समीप आकर बसे थे।

3. नैसफील्ड का विचार है कि जाट शब्द आधुनिक जादौं या यादौं शब्द का हिंदी उच्चारण मात्र है और आजकल यह जादौं राजपूत कहलाते हैं।

4. मिलर का विचार है कि कोई भी प्रतिभा संपन्न लेखक उनके भारतीय आर्य होने पर कोई संदेह नहीं कर सकता।

5. टॉड (1/52) जाटों को 36 राजकुलों में मान्यता है।

6. कानूनगो (जाट) (पृ. 20) और एम एलियट तथा बिम्स (पृ. 128) का विचार है कि जादौं (जाट) शूरसेन की पुरानी सीमाओं को छोड़कर कभी नहीं गए। (सी.वी. वैद्य पृ. 87–88) ये लिखते हैं कि जाट आर्यपुत्र भारत की संतान हैं। ब्रज मण्डल तथा मालवा के मूल निवासी हैं।

7. शिवदास गुप्ता का कथन है कि जाटों ने तिब्बत, युनान, अरब, ईरान, तुर्किस्तान, जर्मनी, साइबेरिया, स्कैंडिनेविया, इंग्लैंड, ग्रीक, रोम व मिश्र आदि में कुशलता, दृढ़ता और साहसिक साम्राज्य किया था और वहीं की भूमि को विकासवादी उत्पादन के योग्य बनाया था।

8. आर्य जाति और उनके वंशज जाट भारत वर्ष के मूल निवासी हैं। जाट लोग भारत से ही विदेश में गए और वहां जाकर बस्तियां बसाईं। जाटों के नाम पर या उनके द्वारा बसाए गए विदेशों में बहुत से नगर हैं। जैसेः– स्पेन में जाटा या जाटवा, स्वीडन में जाटी नडल, परशिया में जाटिनगन, थरीस में जाट देश, डालमीटिया में जटन, जर्मनी में जाटिनागलम्बस, डेनमार्क में जाटलैंड आदि। जाट इतिहास उर्दू पृ. 32 ठाकुर संसार सिंह।

9. जाटों का निवास व शक्ति शाकद्वीप (सिंधु प्रांत) में प्राचीनकाल से रहता आया है। महाभारत काल से 5000 वर्ष पूर्व यहां जाट उन्नति के पथ पर थे। यहां सीमांत प्रहरी के रूप में जाटों ने भारतवर्ष की रक्षा के लिए विदेशी आक्रमणकारियों का बड़े साहस के साथ सामना किया। उन्होंने पश्चिमोत्तर मार्ग से भारत में प्रवेश होने वाले हुणों, शकों तथा युनानियों से लोहा लिया था।

10. इस्लाम धर्म की स्थापना से पहले सिंधु प्रांत में जाट बाहुल्य थे। जाट परिवार यहां के शासक, जागीरदार, उपजाऊ भूमि के स्वामी, विशुद्ध आर्य और वैदिक संस्कृति के संरक्षक थे। सीमांत

प्रदेश में यादव संस्कृति का अरब और ईरान के नवोदित शासक तथा नागरिकों से सर्वप्रथम संघर्षात्मक परिचय हुआ। वहां के लेखक भारतवर्ष के हिंदुओं को जाट (जट) नाम से संबोधित करने लगे। मुस्लिम राष्ट्रों में यह धारणा परंपरागत चलती रही के जाट यादव संस्कृति के वंशज और युद्धवीर हैं क्योंकि महाभारत काल में भी सिंधु नदी के आसपास जाटों का ही निवास था। अरबी इतिहासकार अलबेरूनी के कथानुसार और लेखक भी इससे पूर्ण रूप से सहमति जताते हैं।

11. जाटों से ही राजपूत हुए हैं न कि राजपूतों से जाट। यह कथन राजस्थान इतिहास के लेखक कर्नल टॉड का ही है। जाट संपूर्णतया भारतीय आर्य हैं। जाटों के सरताज महाराजा सूरजमल व उनके पुत्र जवाहर सिंह ने राजस्थान के राजपूतों को कई बार युद्धों में हराया है। (राजस्थान के राजवंशों का इतिहास पृष्ठ 77 लेखक जगदीश राज गहलावत)

12. 'कारनामा राजपूत' के लेखक श्री नजमूल गनी रामपुरी ने जाटों का रहन–सहन सिंधु नदी के पश्चिम में लिखा है। श्री सुख सम्पति राय भंडारी ने अपनी पुस्तक 'भारत में देसी राज्य' में जाटों को आर्यवंशज और भारत के निवासी लिखा है और अनेक इतिहासकारों ने इसकी पुष्टि भी की है।

13. ईसा के प्रारंभिक वर्षों में 'युहची सिंध प्रदेश में आकार बसे। उनका अब भी नाम जीत या जाट है और अब भी वे सिंधु नदी के दोनों किनारों पर काफी संख्या में हैं।

14. पंजाब के सभी जाट गोत्रों की परंपरा पूर्व याक्षक्षिण–पूर्वी राजपूताना एवं केन्द्रीय प्रांतों को अपने मूल निवास स्थान के रूप में बतलाते हैं।

15. लोक परंपरा की दृष्टि से जाट इंडो आर्यन हैं जो पूर्व से पश्चिम की ओर गए न कि इंडो सिंथियन। निसंदेह जाटों का एक निश्चित वर्ग भारत से बाहर गया और अनेक शताब्दियों के पश्चात ईरान की सीमाओं से होकर सिंधु के पूर्व में पुनः प्रविष्ट हुआ। किंतु इसी कारण से विदेशी आक्रांता नहीं कहे जा सकते। कानूनगो लिखते हैं कि अगर केंद्रिय एशिया के गेटे किसी प्रकार आर्यन जदू या जाट हो सकते हैं, तो विपरीत क्रिया से भारतीय जदू (जाट) भी केंद्रीय एशिया के गेटेके रूप में विकृत हो सकते हैं।

16. यदि जाटों का निवास ठीक तौर से मालूम करना है तो हमें मुख्यधारा की ओर जाना होगा। शाखाओं में नहीं। यह कहना कि जाटों का निकास बाहर से आने वाली कोमों से है, क्योंकि बाहर से आने वाली कुछ कोमें जाटों में शामिल हो गई थीं। उसी प्रकार असंभव है जैसा कि गंगा हिमालय से न निकल कर विंध्याचल पर्वत से निकली बतलाना। जाट इतिहास लेखक कालिका रंजन कानूनगो।

17. यही महानुभाव कानूनगो जाट इतिहास के दूसरे पन्नों में लिखते हैं कि कोई भी वैज्ञानिक कारण (फिलालोजिकल या एथोनोलोजिकल) जाटों के भारतीय आर्य होने के विरूद्ध नहीं है। ये न शक, सिंथियन हैं न जथरा न मध्य एशिया से जथरा पहाड़ से आए हैं बल्कि सच्चे भारतपुत्र हैं, जिन्होंने मालवा और राजपुताना को पंजाब से जाने से पहले अपने पुरखों का घर बतलाया है। जाटों से इस बात को स्वीकार कराना कि वे पुराने यादवों की संतान नहीं है, बहुत मुश्किल है।

18. राजस्थान के जिट (जाट) अपने आप को यदुवंशी मानते हैं और वह काबूल (जबलिस्तान) से यहां आकार बसे थे। (टॉड भाग–1, पृ. 88), जाट भारत के आदिवासी हैं क्योंकि वे यहीं से विदेशों में गए और उन्होंने वहां जाकर अपने राज्य स्थापित किए। राजस्थान के जाट यहां के ही आदिवासी हैं। यहीं से वे बाहर गए और बाहर जाकर वहीं उन्होंने अपने राज्य स्थापित किए। मुस्लमान अतिक्रमणकारियों के दबाव से ये अपने देश भारत वापिस आ गए और राजस्थान के बहुत से जाट अपने पैतृक प्रांत राजस्थान में आकर आबाद हो गए।

19. आर्यों का मूल निवास भारत है और जाट ही आर्य है ये बात किसी से छिपी नही है। मिस्टर नेशफिल्ड लिखते हैं कि 'भारतीयों में आर्य विजेता और मूल निवास जैसा कोई विभाग नही है। वे बिल्कुल आधुनिक हैं,' यह अंग्रेजों की कुचाल है जो उन्होंने इस वीर जाति को आक्रांता कहा है। आर्य जाट भारत से बाहर भी गए हैं। पुनः बाहर से वापिस आए भी है तो अपने व्यापार और शासन के लिए अपने घर लौट आए। लेखक भी इससे सहमत हैं।

20. जाट वंश (गोत्र) अनेक आर्य क्षत्रिय एवं राजवंशों के संघ (गण) से प्रचलित हुए हैं। जिनका राज्य आदि सृष्टि या वैदिक काल रामायण, महाभारत, बौध काल में देश–विदेश में रहा। बौध काल के बाद से स्वंत्रता प्राप्ति तक भी भारत में कई छोटे बड़े प्रांतों में जाटों का ही शासन रहा। जाटों का शासन विदेशों में भी रहा परंतु अधिकतर इनका राज्य भारत में ही रहा। निम्न लेखक कनिंघम, इबेटसन, गजेटियर आफ बंबई, जिला गजेटियर मुजफरनगर एम. इलियट, मिमायर्ज आफ दी रेसेज, डब्ल्यूक्रूक, सत्यार्थ प्रकास समुलास, ब्रह्मा की वंशावली, ठाकुर देशराज, प्राचीन भारत के उप–निवेश प्रकाश 'स्वाथ' कर्नल जेम्ज टॉड राजस्थान का इतिहास कालिका रंजन कानूनगो, मध्य एशिया का इतिहास जाट जाति प्रच्छद बौध लेखक धर्मकिर्ति, उपेन्द्र शर्मा, डा. भीम सिंह दहिया, लेखक एंसीलेंट जाट रूलर्स कैप्टन दलीप सिंह अहलावत, कैप्टन रामस्वरूप जून व चौ. भलेराम बेनीवाल आदि सभी महान लेखकों ने जाटों को भारत का ही मूल निवासी बलताया है।

अतः उपर्युक्त उदाहरणों से यह स्पष्ट प्रमाणित हो जाता है कि जाटों का आदि मूल निवास भारतवर्ष ही है। इससे साफ स्पष्ट हो जाता है कि जाट भारतीय क्षत्रिय आर्य है न कि बाहर से आए हुए।

वीर हरफूल सिंह जाट जुलाणी वाला

– बी.एस. गिल, सचिव

17 बूचड़खाने तोड़ने वाले विश्व के सबसे बड़े गौरक्षक वीर हरफूल जाट (Sheoran) का जन्म 1892 ई० मे भिवानी जिले के लोहारू तहसील के गांव बारवास में एक जाट क्षत्रिय परिवार में हुआ था।उनके पिता एक किसान थे। बारवास गांव के इन्द्रायण पाने में उनके पिता चौधरी चतरू राम सिंह रहते थे।उनके दादा का नाम चौधरी किताराम सिंह था। 1899 में हरफूल के पिताजी की प्लेग के कारण मृत्यु हो गयी। इसी बीच उनका परिवार जुलानी (जींद) गांव में आ गया। यहीं के नाम से उन्हें वीर हरफूल जाट जुलानी वाला कहा जाता है।

हरफूल की माता जी को उनके देवर रत्ना का लत्ता उढा दिया गया। हरफूल अपने मामा के यहां तोशाम के पास संडवा (भिवानी) गांव में चले गये।

जब वे वापिस आये तो उनके चाचा के लड़कों ने उसे प्रोपर्टी में शेयर देने से मना कर दिया। जिस पर बहुत झगड़ा हुआ और हरफूल को झूठी गवाही देकर पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया। और हरफूल पर थानेदार ने बहुत अत्याचार किये। उनकी माता ने हरफूल का पक्ष लिया मगर उनकी एक न चली बाद में उनकी देखभाल भी बन्द हो गयी।

सेना में 10 साल

उसके बाद हरफूल सेना में भर्ती हो गए। उन्होंने 10 साल सेना में काम किया। उन्होंने प्रथम विश्वयुद्ध में भी भाग लिया। उस दौरान ब्रिटिश आर्मी के किसी अफसर के बच्चों व औरत को घेर लिया। तब हरफूल ने बड़ी वीरता दिखलाई व बच्चों की रक्षा की। अकेले ही दुश्मनों को मार भगाया। फिर हरफूल ने सेना छोड़ दी। जब सेना छोड़ी तो उस अफसर ने उन्हें गिफ्ट मांगने को कहा गया तो उन्होंने फोल्डिंग गन मांगी। फिर वह बंदूक अफसर ने उन्हें दी।

थानेदार व अपने परिवार से बदला

उसके बाद हरफूल ने सबसे पहले आते ही टोहाना के उस थानेदार को ठोक दिया जिसने उसे झूठा पकड़ा व टॉर्चर किया था। फिर उसने अपने परिवार से जमीन में हिस्सा मांगा तो चौधरी कुरड़ाराम जी के अलावा किसी ने सपोर्ट न किया और भला बुरा कहा। वे उनकी माता की मृत्यु के भी जिम्मेदार थे तो बाकियों को हरफूल ने ठोक दिया। फिर हरफूल बागी हो गया उसने अपना बाद का जीवन गौरक्षा व गरीबों की सहायता में बिताया।

गौरक्षा

पहला हत्था तोड़ने का किस्सा– 23 जुलाई 1930 – टोहाना में मुस्लिम राँघड़ों का एक गाय काटने का एक कसाईखाना था। वहां की 52 गांवों की नैन खाप ने इसका कई बार विरोध किया। कई बार हमला भी किया जिसमें नैन खाप के कई नौजवान शहीद हुए व कुछ कसाई भी मारे गए। लेकिन सफलता हासिल नहीं हुई क्योंकि ब्रिटिश सरकार मुस्लिमों के साथ थी और खाप के पास हथियार भी नहीं थे।

तब नैन खाप ने वीर हरफूल को बुलाया व अपनी समस्या सुनाई। हिन्दू वीर हरफूल भी गौहत्या की बात सुनकर लाल पीले हो गए और फिर नैन खाप के लिए हथियारों का प्रबंध किया। हरफूल ने युक्ति बनाकर दिमाग से काम लिया। उन्होंने एक औरत का रूप धरकर कसाईखाने के मुस्लिम सैनिकों और कसाइयों का ध्यान बांट दिया। फिर नौजवान अंदर घुस गए उसके बाद हरफूल ने ऐसी तबाही मचाई कि बड़े–बड़े कसाई उनके नाम से ही कांपने लगे। उन्होंने कसाइयों पर कोई रहम नहीं खाया। सैंकड़ों मुस्लिम राँघड़ो को मौत के घाट उतार दिया और गऊओं को मुक्त करवाया। अंग्रेजों के समय बूचड़खाने तोड़ने की यह प्रथम घटना थी।

इस महान साहसिक कार्य के लिए नैन खाप ने उन्हें सवा शेर की उपाधि दी व पगड़ी भेंट की। उसके बाद तो हरफूल ने ऐसी कोई जगह नहीं छोड़ी जहां उन्हें पता चला कि कसाईखाना है, वहीं जाकर धावा बोल देते थे।

उन्होंने जींद, नरवाना, गौहाना, रोहतक आदि में 17 गौहत्थे तोड़े। उनका नाम पूरे उत्तर भारत में फैल गया। कसाई उनके नाम से ही थर्राने लगे । उनके आने की खबर सुनकर ही कसाई सब छोड़कर भाग जाते थे। मुसलमान और अंग्रेजों का कसाईवाड़े का धंधा चौपट हो गया।इसलिए अंग्रेज पुलिस उनके पीछे लग गयी। मगर हरफूल कभी हाथ न आये। कोई अग्रेजों को उनका पता बताने को तैयार नहीं हुआ।

गरीबों का मसीहा

वीर हरफूल उस समय चलती फिरती कोर्ट के नाम से भी मशहूर थे। जहाँ भी गरीब या औरत के साथ अन्याय होता था वे वहीं उसे न्याय दिलाने पहुंच जाते थे। उनके न्याय के भी बहुत से किस्से प्रचलित हैं।

हरफूल की गिरफ्तारी व बलिदान

अंग्रेजों ने हरफूल के ऊपर इनाम रख दिया और उन्हें पकड़ने की कवायद शुरू कर दी। इसलिए हरफूल अपनी एक ब्राह्मण धर्म–बहन के पास झुंझनु (राजस्थान) के पंचेरी कलां पहुंच गए। इस ब्राह्मण बहन की शादी भी हरफूल ने ही करवाई थी। यहां का एक ठाकुर भी उनका दोस्त था। वह इनाम के लालच में आ गया व उसने अंग्रेजों के हाथों अपना जमीर बेचकर दोस्त व धर्म से गद्दारी की।

अंग्रेजों ने हरफूल को सोते हुए गिरफ्तार कर लिया। कुछ दिन जींद जेल में रखा लेकिन उन्हें छुड़वाने के लिये

हिन्दुओं ने जेल में सुरंग बनाकर सेंध लगाने की कोशिश की और विद्रोह कर दिया। इसलिये अंग्रेजों ने उन्हें फिरोजपुर जेल में चुपके से ट्रांसफर कर दिया।

बाद में 27 जुलाई 1936 को चुपके से पंजाब की फिरोजपुर जेल में अंग्रेजों ने उन्हें रात को ही फांसी दे दी। उन्होंने विद्रोह के डर से इस बात को लोगों के सामने स्पष्ट नहीं किया। उनके पार्थिव शरीर को भी हिन्दुओं को नहीं दिया गया। उनके शरीर को सतलुज नदी में बहा दिया गया।

इस तरह देश के सबसे बड़े गौरक्षक, गरीबों के मसीहा, उत्तर भारत के रॉबिनहुड कहे जाने वाले वीर हरफूल सिंह ने अपना सर्वस्व गौमाता की सेवा में कुर्बान कर दिया।

मगर कितने शर्म की बात है कि बहुत कम लोग आज उनके बारे में जानते हैं। कई गौरक्षक संगठन भी उनको याद नहीं करते। गौशालाओं में भी गौमाता के इस लाल की मूर्तियां नहीं हैं। ऐसे महान् गौरक्षक को मैं नमन करता हूँ।

जय हरफूल जाट। जय गौमाता। जय महाराजा सूरजमल। जय जाट।

आपके परिवार की इतिहास पुस्तिका कहां है ?

– सूरजभान दहिया

14 अगस्त 2022 को गुड़गांव के एक स्कूल के आजादी के अमश्त महोत्सव समारोह में शामिल होने के अपने अनुभव को आपसे सांझा करते हुये मैं कुछ बदलते परिवेश के विषय में कहना चाहूंगा। विज्ञान प्रदर्शनी देखने के बाद मैंने 12वीं कक्षा के कुछ छात्रों से बात की। बातों–बातों में मैंने एक छात्र से मुगल बादशाह औरंगजेब के पिता का नाम पूछा। उसने झटसे कहा– ''शाहजहां'' और शाहजहां के पिता का नाम? उत्तर मिला– ''जहांगीर''। फिर मैंने जहांगीर के पिता का नाम जाना। ''अकबर, सर'' और अकबर के पिता? ''हुमांयू सर'' तपाक से छात्र बोला। और हुमांयू के पिता कौन? छात्र का जवाब ''बाबर''। मैंने छात्र की पीठ थपथपायी और धन्यवाद भी उसे बोला। फिर मैंने उसके पिता का नाम जानना चाहा। उसने बता दिया। फिर मैंने उसके दादा का नाम पूछा– ठीक उत्तर दे दिया। आगे मैंने उसके परदादा का नाम पूछा– ''नहीं मालूम, सर। थोड़ी सी मायूसी आवाज से बोला? ''अरे बेटे! तुम ने औरंगजेब से लेकर बाबार तक सारे मुगल खानदान का ज्ञान है, पर अपने परिवार के बारे में दादा तक ही जानते हो? मैंने कहा! मैंने अपनी बात जारी रखते हुये उस छात्र से पूछा– ''तुमने ताजमहल देखा है?'' हां, सर, उत्तर मिला और उसे ताजमहल के बारे में सबकुछ पता था। फिर मैंने उससे उनके दादा उनके जन्मस्थान, उनके जन्मदिवस व उनकी दादी के बारे में पूछा। छात्र का उत्तर था– मुझे ज्यादा पता नही, वे गांव में रहते हैं? जो हकीकत मैंने बयान की, वह लगभग सभी छात्रों के संबंध में एक जैसी है। जिसको अपने परिवार का इतिहास ही नहीं पता, उसका जीवन पशु समान है।

आगे मेरी जिज्ञासा थी कि छात्र स्वतंत्रता अभियान के विषय में कितना जानते थे? मैंने सभी छात्रों से पूछा– बच्चो! यह बताओ कि हममें स्वतंत्रता पाने की भावना कब जागी? अंग्रेजों से तो हमारे राजे–महाराजे–बादशाह युद्ध लड़ते रहे। छात्र मौन थे, एक छात्र ने चुप्पी तोड़ी और कहा– सर! हमें हिस्ट्री में ऐसा टोपिक नहीं पढ़ाया जाता, आप इसके बारे में बताइये? फिर इस संबंध में मैंने छात्रों से अपनी जानकारी सांझा की।

''अंग्रेजी ईस्ट इंडिया कंपनी ने दक्षिण भारत से व्यापार करने हेतु भारत में प्रवेश किया। धीरे–धीरे कमजोर दक्षिण भारत के रजवाड़ों को उन्हें जानकारी पाकर सत्ता की लालसा कंपनी ने पा ली। फिर 1757 की प्लासी की लड़ाई जीतकर भारत के दक्षिण भाग पर ईस्ट इंडिया कंपनी ने सत्ता हथिया ली। अंग्रेज मद्रास से चलकर फिर सारे दक्षिण–पूर्वी भारत को रोंदते हुये दिल्ली आ पहुंचे। सभी राजे या बादशाह अपने राज को बचाने हेतु अंग्रेजों से लड़े और उनकी अधिनता स्वीकार कर ली। वहां उन्होंने जनता पर भारी भरकम लगान लगाकर खूब शोषण किया। 1803 में दिल्ली को भी अंग्रेजों ने अपने कब्जे में ले लिया और दक्षिण–पूर्वी भारत की लगान प्रक्रिया यहां पर भी लागू कर दी। यहां का किसान अड़ गया। लगान अंग्रेजों को नहीं देंगे। अंग्रेजों ने अपनी दमन नीति को यहां भी दोहराने की कोशिश की, किसानों का आंदोलन का सिलसिला शुरू हो गया। यहां किसानों में एक इच्छा शक्ति उभरी और उनके अंतःकरण से एक नव प्रेरणा उदय हुई– ''अंग्रेजों को भगाओ, आजादी पाओ।'' उन्होंने अपनी नियति का स्वयं निर्धारण करने का दृढ़ संकल्प लिया और इस प्रकार किसानों व उनके सैनिक पुत्रों ने स्वतंत्रता संग्राम 1857 का बिगुल बजा दिया। 200 साल की गुलामी ने भारत के लोगों को इतना निर्बल और असहाय बना दिया था कि 'आजादी' जैसे सुंदर भाव उनके दिल और दिमाग से बिल्कुल गायब हो गये थे। आप इस काल की हिस्ट्री के एक–एक पन्ने को खंगालिये, आपको आजादी पाने का कही भी जिक्र नहीं मिलेगा। आजादी की आवाज दिल्ली के आसपास के लोगों का जनभावना थी। अतः हमें जन इतिहास का ज्ञान होना जरूरी है– History is the people'' इसी किसानों को उद्घोष से बाल गंगाधर तिलक ने 19वीं सदी के अंत में कहा था– Freedom is my fundamental right and I shall have it. इसके पश्चात् देश में स्वतंत्रता आंदोलन का श्रीगणेश हुआ और यह 90 वर्ष चला और हम 1947 में आजाद हुये।

मैंने पाया कि छात्रों को असली इतिहास को जानने की प्रबल इच्छा है, परंतु स्कूल पाठ्यक्रम में जन इतिहास नहीं पढ़ाया जाता है। उन्हें पता ही नहीं हमारे स्वतंत्रता सेनानी कौन हैं?

हमारे स्वतंत्रता सेनानियों की संख्या लाखों में है। 1857 से लेकर 1947 तक देश की आजादी के लिये असंख्य देशभक्तों ने अपने प्राणों की आहुतियां दी। परंतु आजादी के पश्चात जो स्वतंत्रता सेनानियों की सूची तैयार की वह बहुत सीमित कर दी। प्रसिद्ध लेखक जमाईका किनकेड का कहना है– इतिहास के साथ हमें सही संबंध बनाये रखना होगा कि भूत ने ही वर्तमान को परिभाषित किया है। अंग्रेजो को यह स्वीकार करना चाहिये कि वे अब भी Colonialism से लाभांवित हो रहे हैं। प्रियमवदा गोपाल कैंब्रीज में Postcolonial Studies की प्रोफेसर हैं, उनका कहना है कि स्वतंत्रता आंदोलन में कुछ परिवार अंग्रेजों के सहयोगी बनकर करोड़पति हो गये जो आज अघोषित Monarch बन गये हैं तथा अन्य जो स्वतंत्रता सेनानियों की लिस्ट में आ गये वे राजनीति के बादशाह हो गये हैं– वे स्वतंत्रता सेनानी परिवारों के सदस्य होकर भारत के सर्वेसर्वा हो गये हैं। उनका कहना है कि भारत में रागदरबारी इतिहास कुछ लोगों के लिये लिखा गया है, इसमें जनइतिहास का बहुत बड़ा भाग गायब कर दिया गया है।

उपरोक्त संदर्भ में मैंने स्कूल छात्रों से गुड़गांव के सेक्टर–31, झांडसा गांव का जिक्र किया। यहां के 1857 स्वतंत्रता संग्राम के दो सेनानियों–गालम सिंह एवं बख्तावर सिंह ने अपने प्राणों की आहुतियां दीं, परंतु इनके शहीद परिवारों की पहचान तक नहीं। ऐसे लाखों भारत में Unnoticed, unwept, unsung freedom fighters हैं। विदेशों में विश्व के दो महायुद्धों में भारतीय सैनिकों जिन्होंने वहां लड़ते–लड़ते अपने प्राणों की आहुतियां दी के War Heroes Memorial हैं। वहां के लोग प्रातः अपने काम पर जाने से पहले कृतज्ञता स्वरूप उन भारतीयों के स्मृति स्थल पर जाते हैं तथा उन्हें नमन करते हैं। भारत में तो ऐसी सुखद परंपरा है ही नहीं। भारत में तो ऐसी सुखद परंपरा है ही नहीं। भारत में नई दिल्ली में अब War Memorial बन गया है। परंतु मैं उन Unknown, Wnwept तथा Unsung स्वतंत्रता सेनानियों के प्रति अपनी संवेदना प्रकट कर रहा हूं, जो Historyless हैं। हमें ऐसे स्वतंत्रता सेनानियों का भी स्मृति स्थल निर्मित करना चाहिये और राष्ट्र को उनके प्रति कृतज्ञ होना चाहिये।

अब मैं ताजमहल के प्रसंग को पुनः उठा रहा हूं। ताजमहल अपने परिवार को जीवित रखने तथा उसके प्रति श्रद्धा रखने का प्रतीक है। हमें भी अपने परिवार को सदैव जीवित रखने हेतु अपने परिवार के इतिहास का लेखन करना चाहिये। पहले यह परंपरा परिवारों के खानदानी ब्राह्मण लोग निभाते थे जो अब लुप्त सी हो गई है। इसीलिये यह दायित्व हमें स्वयं निभाना चाहिये। परिवार इतिहास पुस्तिका हमारी Family Heritage के रूप में सुरक्षित रखकर अगली पीढ़ी के लिये अमानत के तौर पर सुपुर्द करने की सुखद परंपरा विकसित करनी चाहिये। इसमें परिवार सदस्यों के फोटो, जन्मदिवस एवं अन्य महत्वपूर्ण Events का उल्लेख होना चाहिये। आप अपने पूर्वजों के जन्मस्थल अर्थात गांव को न भूलें एवं अपनी भाषा, भोजन वेशभूषा से जुड़े रहें। यदि आप इनको भूल गये तो यह निश्चित है कि आप अपनी पहचान को खो देंगे।

हरियाणा की धाड़ संस्कृति

– फूल कुमार मलिक

"या तो इन पशुओं को वापिस छोड़ आओ, वरना जैसे ये पशु–माएं अपने बच्चों की विरह में रम्भा रही हैं, तुम्हारी माताएं भी तुम्हारे बिना वैसे ही रम्भाएंगी (रोयेंगी)" हरियाणवी संस्कृति का वो किस्सा जिसमें वीरता, गौरव व लोकतांत्रिकता भरी है। 'धाड़' हरियाणा की ऐसी संस्कृति जिसमें रहस्य, रोमांच, जासूसी, धूर्तता, भयावहता, लोकतांत्रिकता, मानवता व् वह सब कुछ होता था जो एक समृद्ध संस्कृति कहलाता है। पुराने जमाने में हरियाणा यानि खापलैंड (आज का हरियाणा, दिल्ली, पश्चिमी उत्तर प्रदेश, उत्तरी राजस्थान व उत्तराखंड) में दो तरह के गाँव यानी 'गैभ' गाँव और 'ऐब' गाँव हुआ करते थे।

'गैभ' गाँव वो होते थे जो अमूमन ईमानदारी से खेती करके, एक ठिकाने पर टिक के कमाते थे और बसते थे, और किसी अकस्मात मुसीबत से बचने हेतु जाटों व दलित जातियों के पहलवानों से सुसज्जित लड़ाकू दस्ते रखते थे, जो कि मुख्यतः गाँव की सुरक्षा व खापों के बुलावे पर खापों की लड़ाइयों के लिए जाया करते थे, जैसे कि हरियाणा के जींद जिले का निडाना गाँवय जिसके बारे कि यह किस्सा है और जैसा कि नाम से पता चलता 'ऐब' यानी 'ऐबी' यानी बदमाश गाँव, यह ऐसे गाँव होते थे जो कि 50 से 500 घोड़ों के लश्कर रखा करते थे और रात के अंधेरों में या मौके की ताक के अनुसार 'गैभ' गाँवों पर हमले बोलकर वहाँ से जेवर–रुपया– अनाज व पशुधन जो हाथ लगता लूट लाते थे और यही इनके रोजगार का मुख्य जरिया हुआ करता थाद्य

ये धाड़ें जिधर से भी निकला करती थी, घोड़ों की पदचापों से, रेत भरे गमों (कच्चे रास्ते) से उठती धूल के गुभार गगन चूमा करते थे और घोड़ों के हिनहिनाने की आवाजें दूर से महाकाल के आने का ऐसा ही दृश्य प्रस्तुत किया करती थी जैसा

कि "Gladiator" फिल्म में मैक्सिमस के घर को तबाह करने जाते दस्ते की भयावह पदचाप व वातावरण।

ऐसा ही एक वाक्या एक बार निडाना व एक ऐबी गाँव के बीच हुआ था (आज इन दोनों गाँवों के सुरक्षा व सद्भाव को मद्देनजर रखते हुए इस गाँव के नाम को मैं गोपनीय रखना चाहूंगा, लेकिन इतनी सत्यता जरूर है कि आज भी उस गाँव और निडाना के बीच वैवाहिक रिश्ते नहीं होते)

आज से कोई साठ साल के करीब पुरानी बात है कि इस ऐबी गाँव ने निडाना गाँव पर धाड़ डाल दी, धाड़ डालने का मतलब अपने घोड़ों के लाव–लस्कर के साथ गाँव को लूटने के लिए हमला किया और हमला शाम के वक्त का था, जब गाँव के गौरों (तालाबों के किनारों पशुओं के बैठने की जगह) पर गाँव का अधिकतर पशुधन ले पाली (चरवाहे) बैठे थे। हमला हुआ तो धाड़ इतनी बड़ी थी कि पाली अपने पशुधन की रक्षा नहीं कर सके, और धाड़ अधिकतर दुधारू पशुओं को हाँक ले गई, लेकिन उन पशुओं के बच्चे यानी काटडू–बाछडू गाँव के दरवाजे–दहलीजों में बंधे हुए थे इसलिए वो सिर्फ उनकी माँओं को ले जा पाये।

इधर जब शाम को दूध दोहने का वक्त हुआ तो सारे बाछडू–काटडू भूख से रम्भाने लगे और उधर उस ऐबी गाँव में उनके बच्चों के बिना उनकी माएँ भी रम्भाने लगी तो उन पशुओं की यह हालत देख कर उस गाँव में जितनी भी निडाना गाँव की बेटियां ब्याह रखी थी उनसे रहा नहीं गया और अपने–अपने पतियों व ससुरालियों से निडाना के पशुधन को वापिस करवाने की गुहार लगाई परन्तु वो लोग नहीं माने तो उन बेटियों ने कहा कि या तो इन पशुओं को वापिस छोड़ आओ, वरना जैसे ये पशु–माएं अपने बच्चों के बिना रम्भा रही हैं, ऐसे ही तुम्हारी माएं तुम्हारे बिना रम्भाएंगी (यानी रोयेंगी), क्योंकि निडानिए चढ़े आते होंगे अपने पशुधन को छुड़ाने, लेकिन उन लोगों ने अपनी पत्नियों यानी निडाना की बेटियों की नहीं सुनी।

उधर इस अचानक हमले से और अपने पशुधन के ऐसे लूट लिए जाने से निडाना गाँव पशोपेश में था, गाँव का पहलवानी दस्ता ऐबी गाँव पर हमला करने को उतारू हुआ जा रहा था, पंचायत–पे–पंचायतें, मंत्रणाओं पर मंत्रणाएँ और संदेशों के आदान प्रदान हो रहे थे लेकिन पंचायत ने पहलवानी दस्ते को आखिरी तैयारी के आदेश दे दिए थे और जैसे ही आखिरी संदेशवाहक मान–मनुहार की कोशिश हेतु ऐबी गाँव से नकारात्मक सन्देशा लाया तो निडाना ने ऐबी गाँव पर हमला करने की ठान ली और 'जय दादा नगर खेड़ा' का उद्घोष कर पहलवानी दस्ता हो घोड़ों पर सवार, चला अपने पशुधन को ऐबी गाँव से वापिस लाने। मेरी दादी बताती थ कि पोता हमला इतना जबरदस्त हुआ कि ऐबी गाँव में जो बात हमारे गाँव की बेटियों ने उनके पतियों को समझाई थी वो घटी, यानी कोई–कोई घर ही उस गाँव का ऐसा बचा था जहां निडानियों के हमले की वजह से वहाँ की माएं अपने बेटों की मृत्यु व विरह में ऐसे ही ना रम्भाई हों जैसे कि वहाँ हमारा पशुधन रम्भाया था।

तब दोनों गाँवों की पंचायतों पर पंचायतों के दौर चले और अंततरू गलती उस गाँव की पाई गई, जिससे कि खुंदक खाकर उस पूरे गाँव ने प्रतिज्ञा कर ली कि आज के बाद ना निडाना में बेटी देंगे और ना निडाना से बेटी लेंगे, यानी निडाना से भविष्य में दूध–खून के रिश्ते बंद है और वहीं पंचायत में कह गए कि निडाना में जो भी हमारे गाँव की बेटी हो वह चाहे तो अभी हमारे साथ वापिस चले, हम इस गाँव में ब्याही हमारी बेटियों को आज से तलाकशुदा अथवा विधवा मानते हैं और अपनी बेटियों से गुहार लगाते हैं कि वह वापिस अपने पीहर लौटें। वापिस लौटने पर हमारी बेटियों का वही अधिकार, मान–सम्मान होगा जो जाटों की खाप–सहिंता के अनुसार मान्य है, यानी तलाक के बाद पीहर में एक बेटी के जो प्रॉपर्टी व गुजारे–भत्ते के अधिकार होते हैं वो सारे इन बेटियों को मिलेंगे।

इस फैसले से और दोनों गाँव में बने इस तनाव से कुछ लौट गई बाकी जो रह गई वो फिर कभी अपने पीहर नहीं जा पाई और उनके बच्चों के भात भरने भी ऐबी गाँव वाले कभी नहीं आये उनके देवर–जेठ की ससुराल यानी देवरानी–जेठानी के मायकों से मामा बुलवा उनके भात की रश्में पूरी की जाती रही और ऐसे ही निडाना गाँव की बेटियों के मामले में हुआ जो उधर रह गई वो फिर कभी निडाना नहीं आई और जो आई उनको वही अधिकार मिले जो जाटों की खाप–सहिंता अनुसार मान्य होते आये। वो दिन है और आज का दिन, उस गाँव और निडाना के बीच वैवाहिक रिश्ते नहीं होते।

मीडिया, छवियां और गोत्र विवाद

– डॉ देवव्रत सिंह, एसोसिएट प्रोफेसर

मीडिया किस प्रकार अपने पाठकों और दर्शकों के मन में छवियों का संसार निर्मित करता है और किसी की इमेज रातों–रात बदलकर रख देता है इसका बढ़िया उदाहरण हरियाणा के बारे में मीडिया कवरेज को देखकर मिलता है। कुछ साल पहले तक पूरा देश हरियाणा को ऐसे खाते–पीते और संपन्न राज्य के रूप में जानता था जहां प्रति व्यक्ति आय देश में सबसे अधिक है। हरा भरा हरियाणा, जहां दूध–दही का खाणा। चमचमाती सड़कें, चारों तरफ हरियाली और शहरों जैसे गांव। लेकिन एकाएक इस आधुनिक छवि को ग्रहण लग गया मानो। मीडिया की निगाह में अब हरियाणा गंवार–जाहिल लोगों, आदिम युग के फैसले सुनाती पंचायतों और उनमें बैठे खंडवाधारी बूढ़ों का राज्य बन गया।

सारी आधुनिकता छू मंतर हो गयी और मिर्चपुर में दलितों की बस्तियों के विजुअल दर्शकों में वहशी खौफ पैदा करने लगे। जातीय नफरत की शिकार लाचार लोगों की बाइटों ने

हरियाणा की आधुनिक छवि को नकली साबित कर दिया। दरअसल हरियाणवी समाज की सचाई दोनों ही हैं। एक तरफ आर्थिक संपन्नता के हैरान करने वाले अंबार तो दूसरी तरफ सांस्तिक विपन्नता के परेशान करने वाले व्यवहार। मीडिया जब भी किसी एक हिस्से को अपना विषय बनाता है तो अकसर चित्रण में अतिशियोक्ति करता है और सच को एकांगी रूप में प्रस्तुत करता है। विजुअल मीडिया इसी प्रकार सामाजिक सच्चाईयों से पेश आता है। यही उसका तरीका है और यही उसकी मजबूरी भी।

हरियाणा के लोगों को एक बात का अहसास तो हो चुका है कि मीडिया द्वारा दिखाये जाने के बाद उनकी छवि को बट्टा लग चुका है। अधिकांश हरियाणवी इस दर्द को भलीभांति अनुभव कर रहे हैं कि किस प्रकार पूरा देश उनको लानत दे रहे हैं। इस दर्द की अभिव्यक्ति दो प्रकार से होती है। पहली, खाप पंचायतों में अब जब भी मीडियावाले पहुंचते हैं तो एक तबका उन पर अपना गुस्सा उतारता है। मीडिया से बात करने से मना कर देता है। दूसरा जब पत्रकार कुछ भी पूछते हैं तो वे बचाव की मुद्रा में होते हैं और कहते हैं कि हरियाणा में ऐसा कुछ नहीं है। एक–दो घटनाओं को छोड़ दें तो बाकी सब ठीक–ठाक है।

मीडिया कवरेज ने गोत्र विवाद और खाप पंचायतों के फैसलों को राष्ट्रीय पटल पर लाकर इसे राष्ट्रीय नागरिक पंचायत का मसला बना दिया है। अब इस बहस में अन्य राज्यों के लोग ही नहीं देश विदेश के लोग भी हिस्सा ले रहे हैं। पंचायतों के स्थानीय सामाजिक दबाव पर व्यापक राष्ट्रीय लोकतांत्रिक मीडिया का दबाव भारी पड़ने लगा। अब ये मसला घर का मामला नहीं रहा बल्कि व्यापक नागरिक समाज की समस्या बन गया है। आधुनिक लोकतंत्र में जब हम ग्लोबल मानवीय संस्कारों से रूबरू हो रहे हैं। ये तर्क कि ये हमारे गोत्र, जात, परिवार, गांव या समाज का मामला है अप्रासंगिक सा बन गया है। न्याय–अन्याय और सही–गलत की स्थानीय धारणाएं ध्वस्त हो रही हैं।

कुछ साल पहले एक गांव में दस साल की बच्ची के साथ बलात्कार की घटना के बाद गांव के लोगों ने राष्ट्रीय राजमार्ग जाम कर दिया और दो हते तक धरना भी दिया गया। दो हते बाद पता चला कि बलात्कारी लड़की का मामा ही था। पता लगते ही परिवार वाले ये कहते हुए धरने से उठकर चले गये कि ये तो हमारे परिवार और गांव का मामला है हम इस अपने स्तर पर सुलझा लेंगे। और उस मामा को चेतावनी देकर मामला रफा दफा कर दिया गया। परिवार और गांव की बदनामी के डर से अनेक मामलों में लोग इस प्रकार का रवैया ही अपनाते हैं।

हरियाणा की छवि मीडिया में अलग–अलग माध्यमों पर कुछ अधिक अच्छी नहीं कही जा सकती। पाठकों को याद होगा कि नब्बे के दशक में एम टीवी पर एक चरित्र कम से कम शहरों में तो काफी पोपूलर हुआ था। हरियाणा के कुछ अधकचरे से प्रतीकों को उधार लेकर वो कोशिश थी कि एक ठेठ हरियाणवी छवि को रचनात्मकता के साथ परोसा जाये। एमटीवी के इस कार्यक्रम में एक फटा सा काला कंबल ओढ कर हाथ में एक लट्ठ लिये टूटी फूटी हरियाणवी बोली और लहजे की नकल करता ये कलाकार दरअसल दिल्ली में पला बढ़ा एक अंग्रेजीदां युवा था जिसका हरियाणा से कोई दूर–दूर तक का वास्ता नहीं था। उसने हरियाणा के बारे में जो कुछ भी सीखा था वो कॉलेज में पढ़ने वाले हरियाणवी दोस्त और दिल्ली के आसपास के गांवों के माहौल की थोड़ी बहुत झलक की बदौलत। खैर जो भी हो वो चरित्र अपने अलग अंदाज के कारण काफी चर्चा में रहा और साथ ही देशभर के दर्शकों में हरियाणा की एक ठेठ, अनपढ़, जाहिल, गंवार और कम बुद्धि की छवि का प्रसार भी हुआ।

आजकल ना आना इस देस लाड़ो नामक धारावाहिक भी टेलीविजन पर काफी लोकप्रिय हो रहा है। हरियाणा की पृष्ठभूमि पर रचा गया ये धारावाहिक हरियाणा की सचाई से कोसों दूर है। वैसे तो ये धारावाहिक महिलाओं के साथ होने वाले अन्याय के विरूद्ध आवाज उठाने का दावा करता है लेकिन अपनी बाजारू जरूरतों के दबाव में निर्माता हरियाणा की नकारात्मक छवियों को ही अधिक उजागर कर रहा है। हरियाणा में लड़कियों की भ्रूण हत्या का मामला हो या फिर पंचायती राज में महिलाओं की भागीदारी की बात हो ये धारावाहिक मसालेदार तरीके से दर्शकों को बांधे तो हुए है लेकिन इसका ग्रामीण हकीकत से अधिक वास्ता नहीं है।

हाल ही में एक चैनल ने पंद्रह अगस्त के अवसर पर स्टेज शो कराया और उसका प्रसारण चौनल पर किया गया। इस पैरोडी में महिलाओं पर अत्याचारों को दिखाने के लिए प्रतीक रूप में हरियाणा के चार खंडवाधारी पुरूषों को दिखाया गया। विजुअल मीडिया प्रतीकों में अपनी बात कहता है और रोचक पहलू ये है कि जो खंडवा एक समय शान, इज्जत और ठाठ–बाठ का प्रतीक था वो आज डर, खौफ, नृशसंता का पर्याय बन गया है। पिछले कुछ सालों में हरियाणा के अनेक युवाओं को फिल्मों में काम मिला है लेकिन अधिकांश को ये भूमिका विलेन के रूप में मिली है। ये भी शोध का विषय हो सकता है कि हरियाणा की ये नकारात्मक छवि किस–किस तल पर काम करती है। इसके क्या परिणाम होते हैं और इस प्रकार के छवि निर्माण में स्वयं हरियाणवी समाज की क्या भूमिका है।

किसी भी समाज या समस्या को जब मीडिया चित्रित करता है तो उसकी कोशिश रहती है कि उसका सरलीकरण किया जाये। ऐसा मीडिया अपनी कार्यक्रम निर्माण की सुविधा के लिए करता है। कई बार मीडिया में काम करने वालों की अपनी सामाजिक–सांस्तिक सीमाओं के कारण भी ऐसा घटित होता है। उदाहरण के तौर पर धारावाहिकों के मामले में ऐसे पटकथा लेखकों की संख्या ना के बराबर है जो लगातार समाज में हो रहे

बदलावों से परिचित हों। कारण साफ है एक बार मीडिया उद्योग में काम शुरू करने के बाद अधिकतर निर्माताओं को लेखकों कों समय ही नहीं मिलता और वे अपने ही कोकून में कैद हो जाते हैं। इस दौरान वे धीरे–धीरे समाज की हकीकत से कटते चले जाते हैं। सच से खिलवाड़ अनेक बार कार्यक्रम की लोकप्रियता बढ़ाने के लिये भी किया जाता है। ऐसे में किसी एक सनसनीखेज तथ्य को बढ़ाचढा कर पेश किया जाता है। तो अधिक जरूरी बारीकियों को सिरे से गायब कर दिया जाता है।

पिछले कुछ सालों के दौरान अगर मीडिया कवरेज पर नजर डालें तो कई और पहलू निकल कर सामने आते हैं। अखबारों में कवरेज दो तरीके की है। स्थानीय संस्करणों और राष्ट्रीय संस्करणों (या कहें दिल्ली से प्रकाशित समाचार पत्र) की कवरेज में काफी अंतर है। इसके अलावा हिन्दी और अंग्रेजी के अखबारों की कवरेज में भी काफी फर्क है। स्थानीय संस्करण इस मसले पर थोड़ा चुप से हैं। हरियाणा के प्रमुख समाचार पत्रों – दैनिक भास्कर, दैनिक जागरण, अमर उजाला, दैनिक ट्रिब्यून, हरिभूमि इत्यादि की बात करें तो अधिकांश मौकों पर इन अखबारों ने इस मसले पर कोई पहल नहीं दिखाई। दैनिक भास्कर ने कन्या भ्रूण हत्या और पानी के मुद्दे पर मुहिम चलाई लेकिन इस मसले पर एक एक्टिविस्ट की भूमिका निभाने में संकोच दिखाया। यहीं नहीं इन समाचार पत्रों ने इतने ज्वलंत मसले पर हरियाणवी समाज में एक बहस चलाने की भी जरूरत नहीं समझी। संपादकीय हों या फिर इस विषय विभिन्न पक्षों को स्थान देते हुए लेख छापने की बात हो ये अखबार निरंतर बचते रहे। लगभग राजनेताओं की तरह समाचार पत्र भी ताकतवर तबके के डर से इस आग में हाथ डालते समय दस बार सोचने लगे कि उनके शब्दों का सरकार और समाज के ठोलेदारों पर क्या असर पड़ेगा। उल्टा निरंतर छोटी–छोटी पंचायतों की बड़ी–बड़ी खबरों से समाज में उनके पक्ष में एक माहौल बनाते रहे।

संचार विज्ञानी जॉर्ज गर्बनर बताते हैं कि समाज में यदि एक ही पक्ष में तर्कों को लगातार प्रचार करते रहें तो एक समय के बाद वे तर्क पाठकों और दर्शकों के मन में घर कर जाते हैं। कल्टीवेशन सिद्धांत के माध्यम से इस पश्चिमी विद्वान ने अनेक शोधों से बताया कि मीडिया से हम ना केवल नयी जानकारियां ग्रहण करते हैं बल्कि हमारे आसपास के माहौल की नयी नयी व्याख्याएं भी सीखते हैं। एक मायने में यथार्थ को मीडिया नयी परिस्थितियों निरंतर पुनर्भाषित भी करता रहता है। स्पायरल ऑफ साइलेंस सिद्धांत के मुताबिक समाज में एक तबका ऐसा भी होता है जो बहुमत के विचारों के अनुसार ही अपनी राय तय करता है। मीडिया एक विशेष प्रकार के विचारों को अधिक प्रसारित करके दरअसल इस तबके की राय को अपने पक्ष में कर लेता है। खाप पंचायतों की सनसनीखेज अत्याधिक कवरेज से मीडिया उनकी सामाजिक उपस्थिति को ना केवल स्थापित कर रहा है बल्कि उन्हें मजबूत ही कर रहा है।

न्यायालय द्वारा सजा सुनाये जाने के बाद जिस प्रकार कुरूक्षेत्र में सर्वखाप पंचायत का आयोजन किया गया और उसमें जिस प्रकार का तमाशा पंचायतियों के बीच हुआ उसने इन पंचायतों की आंतरिक राजनीति और अलोकतांत्रिक कार्यप्रणाली को साफ कर दिया। लेकिन मीडिया ने इस एंगल से कवरेज करने के बजाए पाठकों के मन में इस प्रकार का संदेश दिया मानों इस पंचायत के बाद बड़ा भारी बदलाव आने वाला है। खाप पंचायतों के नेता भी अब मीडिया की ताकत को पहचानने लगे हैं यही कारण है कि वे छोटी–छोटी पंचायते अलग अलग जगह कर रहे हैं और उनकी भरपूर बयानबाजी को प्रैस में दिया जा रहा है। अखबारों को खंगालने के बाद ये भी पता चलता है कि अधिकांश अखबार इन पंचायतों के नेताओं के बयानों और उनकी गतिविधियों से भरे पड़े हैं। वहीं दूसरे पक्ष की कवरेज सिरे से गायब है। इसके अलावा इस मसले पर हरियाणा के गैर जाट समुदाय की राय को भी कोई प्रतिनिधित्व नहीं दिया गया है। पूरे देश में लोग मीडिया कवरेज के आधार पर यही जानते हैं कि ये समस्या पूरे हरियाणवी समाज और पश्चिमी उत्तर प्रदेश की है। क्योंकि मीडिया ने ये तथ्य बताया ही नहीं कि खाप पंचायतों की उपस्थिति केवल जाट समाज में ही है। और ये समस्या जाट समुदाय से अधिक जुड़ी हुई है। अगर हरियाणा के विविध समाज, जिसमें अन्य जातियां, महिला समुदाय, दलित पक्ष भी शामिल है, के बुजुर्गों को शामिल करके इस समस्या का निदान ढूंढ़ा जाये तो कई नये कोण और हल निकाले जा सकते हैं।

टेलीविजन चौनलों ने इस दौरान अनेक चर्चाएं आयोजित की। अखबारों में भी लेख प्रकाशित किये गये। लेकिन पूरे विमर्श में अनेक पहलू अनछुए ही रह गये। सारी बहस को केवल सगोत्र विवाह के खिलाफ विमर्श में समेटने की कोशिश की गयी। राष्ट्रीय महिला आयोग ने हाल ही में एक अध्ययन करवाया जिसमें आम धारणा के विपरीत कुछ तथ्य निकल कर सामने आये हैं। खापों के नेताओं ने पिछले लंबे अर्से से बहस को सगोत्र विवाह की मुखालफत तक सीमित करने की कोशिश की है और मीडिया ने भी इसमें उसका साथ दिया है। स्वयं सेवी संगठन शक्ति वाहिनी द्वारा किये गये इस सर्वेक्षण में पता चला कि ऑनर किलिंग की घटनाएं सगोत्र विवाह नहीं बल्कि अंतरजातीय विवाहों के मामले में अधिक हुई है। इस अध्ययन में ये भी पाया गया कि 89 फीसदी मामलों में लड़की के परिवार वाले ऑनर किलिंग के लिए जिम्मेदार हैं। शोध में ये भी पाया गया है कि भारतीय समाज के लगभग हर तबके में अंतरजातीय विवाह का विरोध किया जाता है। ये विरोध तब अधिक तीखा होता है जब लड़की अपने से निची जाति के लड़के से विवाह कर लेती है। यदि लड़का कथित ऊंची जाति का है तो ये विरोध अधिक नहीं होता। इस सर्वेक्षण में

हरियाणा, पंजाब और पश्चिमी उत्तर प्रदेश के ग्रामीण व शहरी क्षेत्रों के 600 लोगों से बातचीत की गयी।

गोत्र विवाद के नाम पर किसी एक भी घटना की बारीकी से जांच पड़ताल कोई पत्रकार करे तो उसे स्थानीय राजनीति, गरीब–अमीर की खाई, जात और गोत्र के प्रभूत्ववादी व्यवहार, भाईचारे के नाम पर जमीन हड़पने की साजिशों समेत ना जाने कितनी परते मिलेंगी। कोई भी सामाजिक परिवेश अपने अंदर अंतहीन उलझे तानेबाने समेटे होता है। लेकिन रिपोर्टिंग में हम केवल सतही रूप से जो घटित हुआ उसे लिखते हैं । किसी मुद्दे पर तुरंत बवाल मचाना और फिर उसे भूल जाना मीडिया की फितरत बन चुकी है। घटनाओं का फोलोअप करना और उसकी बारिकियों को उजागर करने की फुरसत पत्रकारों के पास नहीं है। इस प्रकार मीडिया का रवैया बड़ा ही खिलंदड़ापन लिये हुए है जिसमें जिम्मेदारी और गंभीरता का अभाव है।

आजकल मीडिया किसी भी मसले पर जनमत निर्माण करने में प्रमुख भूमिका निभा रहा है। समाज की जटिल संरचना को समझते हुए पत्रकार यदि इस मसले को भी सुलझाने में सकारात्मक भूमिका निभाने की ठान ले तो ये काम इतना भी कठिन नहीं है। लेकिन इसके लिए पहले मीडियाकर्मियों को भी सदियों पराने पूर्वाग्रहों से ऊपर उठकर आधुनिक विचारों को आत्मसात करना पड़ेगा। उदाहरण के तौर पर गोत्र विवाद से कुछ अहम मसले भी जुड़े हुए हैं जिन पर विचार विमर्श करना चाहिए। जैसे प्यार करने की आजादी, अपना जीवनसाथी चुनने की स्वतंत्रता, संस्कृति और परंपरा को बदलते रूपों में समझना, परिवार और पंचायतों की आधुनिक समझ, इज्जत की अवधारणा, लोकतांत्रिक समाज के आधार इत्यादि। मीडिया को ये भी तय करना पड़ेगा कि उसकी भूमिका समाज को आगे ले जाने की है या फिर दबंगों के पीछे दुम दबा कर चलने की है। इतिहास इस बात का गवाह है कि समाज को आधुनिक बनाने की प्रक्रिया में अनेक अवसरों पर नेतृत्व करने वालों को अकेले ही पहल करनी पड़ती है।

बाबा जैमल सिंहजी

– लक्षमण सिंह फौगाट

डेरा बाबा जैमल सिंह की स्थापना

डेरा बाबा जैमल सिंह ब्यास आज इस डेरे को राधा–स्वामी सत्संग के नाम से भी जानते है। डेरा बाबा जमल सिंह की स्थापना सन 1891 में बाबा जैमल सिंह जी महाराज ने की थी। आपने तहसील बटाला में गाँव घुमान के एक जाट परिवार में जन्म लिया था। आपके पिता का नाम सरदार जोध सिंह जी तथा माता का नाम बीबी दया कौर था। आपका जन्म जुलाई सन 1839 में हुआ था। जन्म से ही आपकी रुचि परमार्थ की ओर थी। बचपन से ही हृदय परमात्मा की भक्ति और प्रेम से भरपूर था। घुमान गाँव में नामदेव जी का एक देहरा है, जिसके बारे में कहा जाता है कि संत नामदेव जी ने अपने जीवन के अंतिम कुछ वर्ष यहां बिताएं थे। बाबा जैमल सिंह जी छोटी उम्र से ही सुबह–शाम वहां जाते और घंटों वहां के बाबा खेमदास जी के पास बैठकर गुरबानी सुनते रहते। बाबा खेमदास जी ने आपके प्रेम और लगन से प्रभावित होकर आपको वाणी पढ़ाना शुरू कर दिया। इस प्रकार छोटी उम्र में ही बाबा जैमल सिंह जी श्री गुरू ग्रन्थ साहिब का पाठ शुद्ध रीति से करने लगे और जपुजी व सुखमनी साहिब आपको जबानी याद हो गए।

पूर्ण पुरूष जब संसार में आते हैं तो बचपन से ही उनकी महानता के लक्षण प्रकट होने लगते हैं।

'पुत के पैर पालने में पहचाने जाते है।'

आठ या नौ वर्ष की उम्र में ही बाबा जी के आग्रह पर बाबा खेमदास जी ने उन्हें 'सोहं सतमाम' के जाप को विधि सिखा दी। उससे आपका मन एकाग्र तो हुआ, परन्तु आंतरिक रूहानी जिज्ञासा शांत न हुई। बाबा जी को तो उस नाम की खोज थी जिसके बारे में श्रो गुरु ग्रन्थ साहिब में लिखा हैः–

नामै ही ते सभ किछ होआ बिन सतगुर नाम न जापे.....।।

और

नाम के धारे खंड ब्रहमंड.....।।

नाम के धारे आगाम पाताल...।।

नाम के धारे पुरीआ सभ भवन...।।

अपकी आयु 12–13 वर्ष की थी। तभी से बाबा जी ने फिर श्री गुरु ग्रन्थ साहिब का अध्ययन शुरू कर दिया। आपने देखा कि श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में प्राणयोग, वैराग्य, हठ कर्म (हठ योग), जप–तप, तीर्थ–ब्रत, कर्मकांड आदि का खंडन किया गया है। आपने सोचा कि फिर वह कौन–सी विधि या अभ्यास का मार्ग है जिस पर चलकर गुरु नानक, संत कबीर, संत नामदेव तथा अन्य महात्मा ऊँची रूहानी पदवी पर पहुँचे? उन महात्माओं ने अकालपुरुष से मिलने का कौन–सा मार्ग बताया है? उसी की आपको तलाश थी।

एक ग्रन्थ साहिब तथा अन्य महात्माओं की वाणियों का अध्ययन करने पर बाबा जैमल सिंह जी इस नतीजे पर पहुंचे कि मालिक की प्राप्ति के लिए किसी ऐसे पूर्ण महात्मा अथवा संत–सतगुरू की जरूरत है जो खुद सभी मंजिले पार कर चुका हो और जिज्ञासुओं को भी ये मंजिलें पार कराने में समर्थ हों।

अन्त में एक दिन आपने बड़े प्रेम से माता को समझा–बुझाकर उनसे बाहर जाने की इजाज़त ले ली और मनुष्य जीवन के सच्चे ध्येय की पूर्ति के लिए घर से निकल पड़े।

उन दिनों रेलगाड़ी, मोटर, बस आदि नहीं थीं और सारी यात्रा पैदल तय करनी पड़ती थी। परंतु बाबा जी अपने मकसद पर अटल थे, वह अपनी तलाश में .ढ़तापूर्वक लगे रहे।

अन्त में रसीकेश उसपर आगे जगलों/पहाड़ों में एक तपस्वी महात्मा से मिले और बड़े प्रेम से बातें करने लगा। जब बाबा जी ने पाँच शब्द के मार्ग के विषय में पूछा तो उसने लंबी साँस लेकर कहा, "जो धुन मुझको है, वही तुम्हें भी है। इतने वर्षों के अभ्यास से मुझे कुछ सिद्धि और आंतरिक ज्ञान प्राप्त हुआ है। लेकिन मैं यह भी जानता हूँ कि पाँच शब्द के अभ्यास के बिना मुक्ति नहीं हो सकती। अर्न्तध्यान से मुझे यह भी ज्ञान हुआ है कि आगरा शहर में एक परम संत, जो सन्रह–अठारह साल से अभ्यास में थे, अब प्रकट हुए हैं और पाँच शब्द ओर लुप्त हुए मार्ग को फिर से जाहिर कर रहे हैं। उनके पास चले जाओ।

वहां से सीधे आगरा पहुंचे लेकिन जल्दी में पता पुछना भूल गए। हार कर मालिक से प्रार्थना करने लगे कि हे मालिक ! मेरी तलाश का तो अब अंत हो चुका है। अब तो तू ही दया कर। हृदय सतगुरु की प्राप्ति के लिए व्याकुल था, आँखों में आँसू भर आए थे। तभी पास ही स्नान कर रहे दो व्यक्तियों की बातचीत सुनाई दी। वे आपस में उन्हीं महात्मा के सत्संग की महिमा कर रहे थे जिनकी बाबा जी को तलाश थी। (बाबा जी कहा करते थे कि यह सारा कौतुक स्वामी जी महाराज को अपनी मौज से ही हुआ था)। आपने उनसे पता पूछा और पन्नी गली में स्वामी शिव दयाल सिंह जी महाराज के द्वार पर जा पहुँचे।

जब बाबा जैमल सिंह जी वहाँ पहुँचे, उस समय स्वामी जी महाराज सत्संग में विराजमान थे। बाबा जी ने इनके चरणों में मस्तक नवाया। बाबा जी को देखकर स्वामी जी महाराज बड़े प्रसन्न हुये और मुस्कराकर बोले, "हमारा पुराना मेली आ गया है। बाबा जी हैरान थे कि मैंने तो इन्हें पहले कभी देखा नहीं, पुरानी मुलाकात कैसी! आप सत्संग में बैठ गए। स्वामी जी महाराज ने श्री गुरू ग्रन्थ साहिब में से शब्द लिया और व्याख्या शुरू की। अपने सत्संग में स्वामी जी महाराज ने पांच नाम का भेद, आंतरिक मंजिलों का हाल, धुन, शब्द आदि की इतनी स्पष्ट व्याख्या की कि एक ही सत्संग से बाबा जी को विश्वास हो गया कि जिन महापुरूष की उनको अरसे से तलाश थी, वा परमपिता परमात्मा की कृपा से आज मिल गए हैं।

स्वामी जी महाराज ने खुद ही एक दिन कृपा करके बड़े प्यार के साथ आपसे पूछा, "क्यों बेटा, अभी तक सिक्ख और मोने के सवाल का फैसला तुम्हारे दिल ने किया या नहीं?"

इतना सुनना था कि बाबा जी की आंखों से प्रेम के आंसुओं की धारा उमड़ पड़ी जो किसी प्रकार थम ही नहीं रही थी। स्वामी जी महाराज ने धीरज बंधाते हुए फरमाया, "सत्य की खोज करनी चाहिए"।

बाबा जी के हृदय में प्रेम की भावना ऐसी उमड़ी कि आपने उठकर अपना मस्तक स्वामी जी महाराज के पवित्र चरणों पर रख दिया और उस दयाल ने दया और मेहर के साथ अपने दोनों हाथ उनके सिंर पर रख दिए।

दूसरे दिन बाबा जी को नाम की बखिशश हो गई और 'पंच शब्द' की हकीकत का पूरा भेद बता दिया गया। दो दिन और दो रात वह एक छोटी–सी कोठरी के अंदर अकेले लगातार समाधि में लीन रहे। आपको स्वामी जी महाराज ने फरमाया, "तुम हमारे पिछले मेली हो। यह सब कमाई तुम्हारी पहले की हुई हैं।"

स्वामी जी महाराज जैसा पूर्ण सतगुरु और बाबा जी जैसा सच्चा खोजी शिष्य! अनुपम संयोग था। उस समय बाबा जी की उम्र करीब 17 वर्ष की थी।

स्वामी जी ने बताया की इस सत में अपनी नेक कमाई से गुजारा करना पड़ता है। इसलिए स्वामी जी महाराज के हुक्स से आप सिक्ख पलटन नम्बर 24 में जो उन दिनों आगरा में स्थित थी, भर्ती हो गए। यह सन 1856 की बात है। जितने दिन पलटन आगरा में रहीए आप रोज़ाना स्वामी जी महाराज के दर्शन व सत्संग के लिए पन्नी गली आया करते थे। उस समय की आपकी गुरु भक्ति और नाम की कमाई को बहुत–सी घटनाएँ प्रसिद्ध है।

इसके बाद पलटन में बाबा जी को कभी कोई तकलीफ नहीं हुई। आपके अफ़सर आपसे बहुत प्यार करते और हमेशा इज्ज़त से पेश आते। अंग्रेज अफ़सर भी आपकी बुजुर्गी के कायल थे। स्वामी जी ने यह भी फरमाया कि "यह धुन है धुर लोक अधर की। कोइ पकड़े संत सिपाही।।"

सन 1875 में बाबा जी नायक बन गए। हर छुट्टी पर आप आगरा जाते रहे। अक्तूबर 1877 में आप छुट्टी लेकर स्वामी जी महाराज के चरणों में आगरा आए हुए थे, विदा के समय स्वामी जी महाराज ने फरमाया, "अब यह हमारी और तुम्हारी आखिरी मुलाकात है। हमारी संसार की यात्रा अब समाप्त होने को है और तुम्हारी अगली लंबी छुट्टी की पहले हम वापस परम धाम को चले जाएँगे। आज के बाद तुमको देह स्वरूप का मिलाप नहीं होगा।" केवल शब्द स्वरूप में ही मिलाप होगा।

बाबा जी के एक गुरुभाई चन्दा सिंह उस समय वहाँ मौजूद थे। वह पंजाब के रहनेवाले थे। अच्छे अभ्यासी थे। उन्होंने स्वामी जी महाराज की सेवा में विनती की कि हुजुर तो परम धाम सिधारने की बात करते हैं, पर हमारी सँभाल और रहनुमाई करने वाला कौन होगा और पंजाब में भी आम सत्संग जारी होना चाहिए।

स्वामी जी महाराज ने फरमाया, "यह बिनती अकालपुरुष ने परवान कर ली है और साहिब के दरबार से यह काम पहले–ही भाई जैमलसिंह के नाम सौंपा जा चुका है।" उसके बाद स्वामी जी महाराज ने अन्य प्रसाद के साथ अपनी पगड़ी भी प्रसाद करके बाबा जी को दी और बड़े प्रेम से उन्हें विदा किया।

उन सभी वर्षों में बाबा जी नौकरी के बाद अपना पूरा समय भजन में बिताते रहे। छुट्टियों में आप कुछ दिन घुमान में रहकर ब्यास नदी के किनारे आ जाते और दिन–रात भजन में लीन रहते। 15 अगस्त, 1889 को बाबा जी लगभग 34 वर्ष की सैनिक सेवा के बाद पेंशन लेकर अपने गाँ घुमान आ गए।

सबकी की मौजूदगी में बाबा जी के सिर पर पगड़ी बंधवाकर माता जी ने बाबा जी की याद दिलाया कि स्वामी जी महाराज आपको पंजाब में नाम का प्रचार करने का हुक्म दे गए थे , सो उनके हक्म के अनुसार सत्संग और नाम का प्रचार जारी रखो और स्वामी जी का आसन भी लाकर बाबा जी को सौंप दिया।

बाबा जी ने उसे दोनों हाथों में लेकर अपने सिर से लगा लिया। यह आसन भी डेरे में मौजूद है।

स्वामी जी महाराज के ज्योति–जोत समाने के बाद सन 1879 से बाबा जी का यह नियम था कि पहले अपने गाँव घुमान जाकर वहाँ दो–तीन दिन ठहरे। फिर ब्यास नदी के किनारे, जहाँ अब डेरा है, आकर दिन–रात भजन–सिमरन में लीन रहते।

"जब दीप जलता है तो पतंगे खुद ही उसकी ओर खिंचे चले आते हैं। आपकी महानता, रूहानी अभ्यास और सरल व स्पष्ट सत्संगों की ख्याति शीघ्र ही आसपास के गाँवों में फैल गई। आपका जीवन संतमत के नियमों का आदर्श नमूना था। आपकी नेक और पवित्र रहनी लोगों को आकर्षित करने लगी। आप अपना निर्बाह अपनी पेंशन पर ही करते थे। कभी कोई वस्तु किसी से न लेते थे और न ही अपना भार किसी पर डालते (यही रीति आपके बाद आपके उत्तराधिकारियों की भी रही है।) ऐसे महात्मा के सत्संगों में भीड़ क्यों न होती!

पहले तो बाबा जी महाराज एक कच्ची कोठरी में ही निर्वाह करते रहें। परंतु जब हजुर महाराज सावन सिंह जी आपके शिष्य बनें, तब उनके अनुरोध पर आपने उस कोठरी को पक्का करने की इजाजत दे दी। उन दिनों डेरे में कुआँ नहीं था। सत्संगी पास के गाँवों से पानी लाते थे। जब संगत कम होती तो बीबी रुक्कों ही गागर में पानी भरकर लाती थीं।

हुजूर महाराज सावन सिंह जी जब पहली बार यहां आए तो उन्होंने देखा कि बीबी रूक्को कहीं से गागर भरकर पानी लाईं। "बाबा जी ने मुस्कराकर उत्तर दिया, "अच्छी बात है, कुआँ बनवा लो। मैं तो इससे बँधकर नहीं बैदूँगा। तुम्हें ही इससे बँधकर यहाँ रहना पड़ेगा।" बाबा जी की इस बात का रहस्य तब समझ में आया जब बाबा जी ने हुजूर को अपने बाद गद्दी बख्शी। कुआँ बनवाने की इजाजत मिलने से कुएँ के लिए ईंटें बनाने का भट्ठा भी लगाया गया।

बाबा जी महाराज ने 34 साल सेना में नौकरी करके हक–हलाल की कमाई द्वारा अपना गुजारा किया तथा रिटायर होकर पेंशन पर आए। आप हर महीने अपनी पेंशन लेने सठियाला गाँव (डेरा से 2–3 मौल दूर) जाते थे। आपका जीवन सादा था, रहनी बड़ी पवित्र और ऊंची थी। अपनी पेंशन में से अपना खर्च चलाने के बाद, आनेवाले सत्संगियों की सेवा में भी खर्च करते थे। कुछ निकट के प्रेमी सत्संगियों को अपने चौके से खाना खिलाते थे। आप कपड़े बहुत कम रखते थे। सामान के नाम पर थाली, कटोरी, लोटा, एक चारपाई, बिस्तर एक जोड़ी जूते व खड़ाऊँ, एक छड़ी और गिनती के कपड़े रखते थे। अपने सत्संगियों को आप हमेशा हक–हलाल की कमाई का आदेश देते थे। वह फरमाते कि ऊँचे उसूल, पवित्र रहनी और हक–हलाल की कमाई भजन के लिए बहुत जरूरी है। "बाबा जी महाराज जब भी डेरे में होते तो सत्संग रोज करते थे।

बाबा जी महाराज के समय में स्वामी जी महाराज की वाणी हिंदी में छप चुकी थी। लेकिन बाबा जी की इच्छा थी कि पंजाबी में भी साबरचन वार्तिक और सारबचन छन्द–बन्द, छापे जाएँ।

स्वामी जी ने उपदेश तुलसी साहिब हाथरस वालों से लिया था। 1903 में दोनों पुस्तकें पंजाबी में छपकर आ गई। बाबा जी महाराज का हुजूर महाराज सावन सिंह जी को आदेश था।

आप मुझे अपनी देह क प्राणों से भी प्यारे हो। फिर जन्म नहीं होगा। जहाँ मैं रहूँगा उसी जगह आप भी मेरे साथ रहेंगे। मैं आप पर बहुत–बहुत राजी हूँ।

हुजूर को बाबा जी महाराज ने एक पत्र में परमार्थी के लिए रहनी बताई और इस प्रकार आदेशः दिया – फिर सुबह साढ़े चार बजे भजन में बैठ जाना।

डेरे में जब छोटा सत्संग घर बनकर तैयार हो गया तो इसमें बाबा बी महाराज ने केबल एक ही सत्संग किया। प्रेमी सत्संगियों के बार–बार अनुरोध करने पर फरमाया, "यहाँ बाबू सावन सिंह सत्संग किया करेंगे।"

बाबा जी ने जवाब दिया, "प्रत्यक्ष बैठे संत जिसे अपना जानशीन मुकर्रर करते हैं, वह उनका ही स्वरूप होता है।" फिर फरमाया, "जिसे मैं मुकर्रर करूँगा वह मुझसे भी तेजस्वी होगा। मैं गुप्त रहा हूँ और वह प्रकट रहेगा। मैं तो हर एक का लिहाज रखता था, वह परमार्थी के सिवा किसी से मेल–जोल नहीं रखेगा।"

फिर बाबा जी ने कहा, "संतमत की किसी को समझ नहीं आई। जेसे संत खुद समझा देंगे, बही समझेगां। जीव को क्या खबर हे!"

चार या पाँच दिसंबर को बाबा जी महाराज के पास कुछ सत्संगी बैठे हुए थे। तब बाबा जी ने फरमाया कि पौष की चतुर्दशी, अंग्रेजी हिसाब से दिसंबर की 28 तारीख की रात को

मुझे जरूर चले जाना है। फिर कुछ परमार्थ की बातें कीं और फरमाया कि जो सतगुरु के हुक्म और बचन के,अंदर रहते हैं, बे जीते–जी मुक्त हो जाते हैं।

अब स्वामी जी महाराज की मौज एक की ही है, सो एक से ही छः का काम ले लेंगे और यह काम बाबू सावन सिंह से लिया जाएगा।

बाबा जैमल सिंह जी

बाबा जी महाराज 28 दिसंबर की रात और 29 की सुबह के बीच ज्योति–जोत समा गए।

हुजूर 29 दिसंबर की शाम को डेरे आ गए। दूसरे दिन सुबह, 30 दिसंबर को बाबा जी महाराज के पार्थिव शरीर का संस्कार हुजूर महाराज सावन सिंह के हाथों से हुआ। बाबा जी महाराज अपने जीवन काल में कई बार हिदायत देते थे कि उनके बाद उनकी कोई समाधि, चबूतरा, छतरी आदि न बनाई जावे। बाबा जी के पावन शरीर का संस्कार ब्यास नदी के किनारे किया हुजूर महाराज जी बयान किया करते थे कि जिस जगह बाबा जी महाराज का संस्कार किया था, वहाँ दूसरे दिन ही दरिया का पानी चढ़ आया। दरिया वह जगह ही बहा ले गया जहाँ संस्कार किया गया था और उनके फूल भी न चुने जा सके।

बाबा जी महाराज बचपन से ही अध्यात्म के प्रेमी और सत्य के खोजी थे। 12 वर्ष की कोमल आयु में आप पाँच नाम और शब्द के भेद की रु खोज में घर से निकल पड़े थे। पाँच साल तक स्थान–स्थान पर तलाश करते रहने और कई महात्माओं से भेंट करने के बाद वह 17 वर्ष की आयु में स्वामी जी महाराज के पास आगरा पहुँचे और नामदान प्राप्त किया। उसी साल आप सेना में भर्ती हो गए और 34 वर्ष की सैनिक सेवा के बाद 50 वर्ष की आयु में पेंशन लेकर रिटायर हुए। जब आपने 1877–78 से नाम की बख्शिश शुरू की तब आपकी आयु 39 वर्ष की थी और सेना में हवलदार थे। 52 वर्ष की आयु में आप ब्यास नदी के किनारे डेरे में आकर स्थायी रूप से रहने लगे, 2,343 भाग्यशाली जीवों को नाम दिया और 29 दिसंबर, 1903 को 64 वर्ष की आलू में ज्योति–जोत समा गए।

इसके बाद महाराज सावन सिंह जी राधा स्वामी सत्संग की गद्दी पर बैठे। उन के बाद महाराज जगत सिंह जी उनके बाद महाराज चरण सिंह जी और उन के बाद बाबा गुरीन्द्र सिंह की मौजूदा सरकार है। इन की देखरेख में आज बाबा डेरा जैमल सिंह ब्यास एक आदर्श बस्ती/छोटे शहर के रूप में विकसित हो रही है।

वैवाहिक विज्ञापन

- SM4 Jat Girl (DOB 04.09.94) 28/5'4" B.Sc., M.A (English Literature), B.Ed. Father in Government job. Mother housewife. 12 acre agriculture land. Avoid Gotras: Khokhar, Malik, Sehrawat, Panwar. Cont.: 9915964189.
- SM4 Jat Girl (DOB 11.11.97) 25/5'5" B.A. M. A. (Hindi), D.Ed. Ed., JBT. Father in Government job. Mother housewife. 12 acre agriculture land. Avoid Gotras: Khokhar, Malik, Sehrawat, Panwar. Cont.: 9915964189.
- SM4 Jat Girl (DOB 1995) 27/5'1" B.Sc. from Kurukshetra University, M.Sc. from Punjab University, PhD. From Punjab University. Father in Central Government job. Mother housewife. Preferred match in Government job from Tricity. Avoid Gotras: Rathi, Kharb, Rana. Cont.: 9812238950
- SM4 Jat Girl (DOB Jan. 93) 30/5'5" B.Com. Sub Inspector in CAPF. with package Rs. Seven lakh PA. Father retired Labour Inspector. Mother in Government job in P.S.U. Avoid Gotras: Dangi, Malik, Nandal. Cont.: 8901049242.
- SM4 Jat Girl (DOB 29.10.89) 33/5'8" B.Com from Punjab University Chandigarh. M.A. Public Administration from M.D.U. Rohtak. Hotel Management ICCA Dubai. MDRT (Medical Device Reprocessing Technician) Vancouver Canada. Canada PR. Presently working in Canada. Father self business. Mother social worker. Avoid Gotras: Ahlawat, Sangwan, Khatri. Cont.: 9463131189.
- SM4 Jat Girl (DOB 07.08.93) 29/5'5" B. Com, C.A., Working as C.A in Mohali package Rs. 13 lakh PA. Avoid Gotras: Chahal, Dahiya, Dhankhar. Cont.: 9417301464
- SM4 Jat Girl (DOB 20. 09. 96) 26/5'5" B. Sc. (Hons.) & M.Sc. (Hons) in Geology (Earth Science). Working as Hydrogeologist. Younger brother pursuing MBBS. Father Budge Officer, DSE Panchkula. Family settled at Zirakpur. Avoid Gotras: Ahlawat, Dhatterwal, Hooda. Cont.: 9915783511, 9814885021
- SM4 Jat Girl (DOB 14. 03. 96) 26/5'4" M.Sc. Physics, B.Ed., CTET, HTET passed. Pursuing PhD. From Punjab University Chandigarh. JRF, UNET pass. Father retired Gazette Officer. Avoid Gotras: Nain, Dhanda, Punia. Cont.: 9416121082.
- SM4 Jat Girl (DOB 17. 09. 87) 35/5'6" M.A., M.Sc. (Geology). Working in NGO. Avoid Gotras: Ahlawat, Sangwan. Cont.: 9463837233.
- SM4 Jat Girl (DOB 26.04.94) 28/5'5" B.Sc. Math, M.Sc. Math from Delhi University, B.Ed. Pursuing PhD. (Math) from PEC Chandigarh. Father

Pharmacist at CGHS, Delhi. Mother housewife. Avoid Gotras: Dalal, Gulia, Malik. Cont.: 7015953425.

- SM4 Jat Girl (DOB 05.07.97) 25/5'3" B.Tech. (CCE). Working as Software Engineer in reputed Sales Force MNC with Rs. 22 lakh PA. Father's own business. Mother housewife. Family settled in own house at Kurukshetra. Mother housewife. Avoid Gotras: Nain, Anttal. Cont.: 9416112949.
- SM4 Jat Girl (DOB 26.11.99) 23/5'3" MA Psychology. Pursuing P.G. Diploma in Guidance & Counseling. Father Advocate. Mother housewife. Avoid Gotras: Lather, Hooda, Rathi. Cont.: 9416504138..
- SM4 Jat Girl (DOB 01.01.95) 27/5'2" MSc. (Math), B.Ed. HTET, TGT, CET qualified. Father Superintendent in Haryana Government. Preferred Tri-city match. Family settled at Panchkula. Avoid Gotras: Beniwal, Dhillon, Nehra. Cont.: 9466442048, 7888544632.
- SM4 Jat Girl (DOB 11.09.95) 27/5'5" B.Sc. Nursing, MA Public Administration. Working in PGI Chandigarh as Nursing Officer. Brother working in Reliance Company Cyber Security Eng. Office in Pune. Father retired from Haryana Government service. Family settled at Chandigarh. Preferred match from Tri-city. Avoid Gotras: Kaliraman, Pawar, Jani. Cont.: 9416083928.
- SM4 Jat Girl (DOB 14.03.96) 26/5'4" M.Sc. Physics, B.Ed, CTET, Pursuing Ph.D in Physics. NET, JRF passed. Father retired SDO Agriculture. Avoid Gotras: Nain, Dhanda, Punia. Cont.: 9416121082.
- SM4 Jat Girl (DOB 08.12.92) 31/5'2" B. A. (Arts.), M.A. (Hindi), HTET, CTET, PTET, PGDCA from Hartron. Employed as Data Entry Operator in Town & Country Planning Department on contract basis. Family settled at Panchkula. Avoid Gotras: Siwach, Shehrawat, Maan. Cont.: 9417097248
- SM4 Jat Girl (DOB 02.06.1995) 27/5'4" 10+2 CBSE Board, M.Sc. Chemistry from Punjab University, Chandigarh throughout 1st class. Also comleted B.Ed. Working as Axis Bank (BDO-Branch Dev. Officer salary Rs. 22,000/-. Father Govt. Job, working as PA in Agriculture Department, Hr. Pkl. Avoid Gotras: Bhanwala, Narwal, Beniwal . Cont.: 09872789567.
- SM4 Jat Girl (DOB November 1994) 28/5'2" B.Sc Medical, "M.Sc (Botany), "B.Ed (Regular), "M.Ed (Regular), CTET Qualified- Level 1,2 "AWES Qualified-TGT, PGT Level. ather Haryana Govt Employee and Mother Home Maker. Avoid Gotras: Redhu, Bhambhu, Godara. Cont.: 7837315175
- SM4 Jat Girl (DOB 13.10.91) 29/5'5" BA, LLB (Hons.), LLM in Criminal Law, Diploma in Labour Law, Diploma in Administrative Law, Ph.D in International law. Employed in Education Department, Haryana. Avoid Gotras: Malik, Deswal. Cont.: 9417333298
- SM4 Jat Girl (DOB 19.09.96) 26/5'4" B. Com. (Hons.) Economics, M. Com from Punjab University. Working as Assistant Manager in Axis Bank, Karnal. Avoid Gotras: Deswal, Kundu, Khokhar. Cont.: 9805384830
- SM4 Jat Boy (DOB 18.11.94) 28/5'9" B.A. M.A., B.Ed. Master in Sociology. One year computer course. Own coaching centre with income Rs. 45000-50000. Father in Punjab Home Guard & Civil Defense Department. Family settled at Nayagaon (Punjab). Avoid Gotras: Lohchab, Dahiya, Gahlan, Hooda, Dalal. Cont.: 9888572592, 7009317068
- SM4 Jat Boy (DOB 01.01.98) 25/5'6" Working as Data Entry Operator on contract basis in B.B.M.B. Chandigarh. Father in Government job. Avoid Gotras: Beniwal, Garhwal, Lamboria. Cont.: 9416249841
- SM4 Jat Boy (DOB 30.08.95) 27/5'10" B.A. Working as Clerk in Irrigation Department Panchkula on contract basis. Father employed in C.M. Cell Haryana. Family settled at Chandigarh. Avoid Gotras: Duhan, Sheoran. Cont.: 9417088089, 9999973190
- SM4 Jat Boy (DOB 18.10.98) 24/5'11" B.Sc. Agriculture from PDM Bahadurgarh. Business Management from U. K. (England). Job in U. K. with Rs. 2.50 Lakh P.M. Father own business. Mother in PGI Rohtak. Wanted B.Sc. Nursing girl willing to shift in U. K. after marriage. Avoid Gotras: Sheokand, Kalkandha, Nain. Cont.: 9466690944, 8396090944
- SM4 Jat Boy (DOB 02.04.96) 26/6 feet. B. Tech. Working as Junior Engineer in Indian Railways. Family settled at Chandigarh. Avoid Gotras: Bamel, Sheoran, Nehra. Cont.: 8360237338, 9468166359
- SM4 Jat Boy (DOB 06.11.98) 24/5'10" B. Com. Diploma in computer. Own business of mobile repair. Family settled at Panchkula. Avoid Gotras: Barak, Dalal, Kadyan. Cont.: 8146229865, 9877552019
- SM4 Jat Boy (DOB 26.05. 94) 28/6'3" B. Tech (Mechanical). Settled in Canada. Father in Government job in Haryana. Mother Government teacher at Panchkula. Avoid Gotras: Sayan, Punia. Cont.: 9417303470, 9416877531.
- SM4 Jat Boy (DOB 05. 09. 96) 26/5'9" B. Tech from IIT Delhi. Presently working as Software Engineer in Tokya, Japan with salary package about one crore LPA. (Boy can move anywhere after marriage). Younger son also Software Engineer at Banglore with package Rs. 30 lakh PA. Parents retired from Haryana Government as Class-I officer and settled at Panchkula. Avoid Gotras: Khokhar, Gurawalia, Mor. Cont.: 9876221778.
- SM4 Jat Boy (DOB 18. 10. 90) 32/6'1" B. Tech from UIET (Punjab University Chandigarh). Employed as Inspector CBI at Port Blair with salary above Rs. One lakh. Family settled at Zirakpur (Punjab). Preferred match working in State/Central Government. Avoid

Gotras: Khasa, Dahiya, Lathwal. Cont.: 9023492179

- SM4 Jat Boy (DOB 04.10.95) 27/5'8" B.Tech., MBA. Employed in Hyderabad with package of above Rs. 20.5 lakh PA. Family settled in Panckula. Parents retired pensioners. Avoid Gotras: Sindhu, Rathi, Sharai, Dalal. Cont.: 9872793675
- SM4 Jat Boy (DOB 11.10.98) 24/5'7" Employed as Probationary Officer in SBI. Avoid Gotras: Grewal, Chahal, Dhankhar. Cont.: 9416761353
- SM4 Jat Boy (DOB 10.10.94) 28/5'11" B.Tech. from CJU Hisar. PGDCA, MBA (IT & HR) Employed as Team Leader in Infosis Mohali. Father Advocate at Jind. Mother teacher retired. Avoid Gotras: Malik, Sheoran, Sindhu. Cont.: 9812157267
- SM4 Jat Boy (DOB 08.06.98) 24/5'11" B.A, LLB (Homs.) LLM (Criminal). Pursing P.G. diploma in forensic science. Working as Advocate. Father Advocate. Mother housewife. Avoid Gotras: Laher, Hooda, Rathi. Cont.: 9416504138
- SM4 Jat Boy (DOB 25.04.93) 29/6 feet. B.Tech. Employed as Assistant Manager in Jai Parvati Forge Limited. Near Derabassi (Punjab). Annual income Rs. Six lakh PA and five acre agriculture land. Father retired from Government job. Mother housewife. Family settled in own house at Zirakpur. Avoid Gotras: Nehra, Dhull, Kadyan. Cont.: 9876602035, 9877996707.
- SM4 Jat Boy (DOB 27. 04. 89) 33/5'10" B. Tech in Bio-Medical Engineering. Currently working in a reputed Masters' Medical Company with package Rs. 27 lac PA. Father's own business of Medical Equipments. Mother housewife. Avoid Gotras: Jattain, Duhan, Dagar. Cont.: 9818724242.
- SM4 Jat Boy (DOB Jan. 89) 33/6'1" BA, PGDCA and diploma in Computer Science. Working in private school. Family settled at Chandigarh. Avoid Gotras: Chahal, Malik, Ghanghas. Cont.: 9896840403.
- SM4 Jat Boy (DOB 20.11.96) 26/5'7" B.A. Working as Stenographer on regular basis in Haryana government Department. Avoid Gotras: Narwal, Kundu, Mann. Cont.: 9315428491, 9417869505
- SM4 Jat Boy (DOB 28.04.96) 26/6'2" Captain in Army. BSC Chemistry from NDA. B. Tech. from CME in Pune. Father's own business of Transport at Chandigarh and Nagpur. Mother housewife. Only child. Avoid Gotras: Dhull, Nehra, Sheoran. Cont.: 9878705529.
- SM4 Jat Boy (DOB 19.03.92) 30/6 feet. B. Tech Mechanical Engineering. Diploma in Sound Engineering. BTEEC Certificate in Music Technology from Point Blank Music School London. Currently working: free lancing. Avoid Gotras: Kajal, Khatkhar, Khatri. Cont.: 9466954276.
- SM4 Widower with two kids Australian Citizen Jat Boy. Age 44 years. B. Tech., Pilot. Well settled in Melbourne, Own multiple business. Parents settled at Panchkula. Avoid Gotras: Nain, Solanki, Dalal. Cont.: 61401377715, 9872044466.
- SM4 Jat Boy (DOB 25.12.94) 27/5'8" BA, LLB from Punjab University Chandigarh. Father HAS class-II (Rtd.). Mother housewife. Own house at Zirakpur (Punjab), Hotel/Show Room/Income/crore/year. Agriculture land and own house at village. Avoid Gotras: Balyan, Deswal, Pannu. Cont.: 9216886705.
- SM4 Jat Boy (DOB 09.09.97) 24/6 Feet. B. Tech. (Computer Science), MBA. Employed as Software Engineer in Rocket Software, Pune with package of Rs. 16 lakh+ PA. Father retired as Supervisor from HMT Ltd. Pinjore. Mother housewife. Family Business Coaching Institute at Pinjore (Haryana) with Rs. 31 lakh PA. Avoid Gotras: Bankura, Maan. Cont.: 9354839881
- SM4 Jat Boy (DOB 17. 08. 95) 26/6'1" B. Tech. (CSE). Working as Software Engineer in MNC at Pune with Rs. 15 lakh PA. Father Officer in Agriculture Department Haryana. Family settled in own house at Kurukshetra. Avoid Gotras: Tomar, Teotia. Cont.: 9466262234

आम आदमी पिस्ता जाएगा

– सुखदीप सांगवान

कहीं हैं क्या दिल में छुपी कुछ देशभक्ति,
कभी आहत होती हैं क्या अन्तःकर्ण की शक्ति,
कुछ देशप्रेम के अंश बचे हैं क्या जहन में,
या फिर विवेक बर्फ हो चला है आपके अन्तर्मन में,
क्या हुआ है आभास कभी एक अद्भुत सी घुटन का,
क्या महसूस की है नफरतों की आंधियों में वो चुभन,
क्या अन्तरात्मा कसमसाती है कभी,
जब 'टी.वी.' पर पकाई जाती हैं द्वेष और घृणा की 'कढ़ी',
क्या विक्षत होगा कभी अन्तःकरण हमारा,
क्या विवेचित करेंगे हम कभी, चैतन्य हमारा,
कब तक बंदी रहेंगे हम टीवी की 'नफरती शामों' के,
कब झकझोरेंगे ईमान, इन चन्द 'विषमयी' एंकर–एंकराओं का,
हे जनमानस, उठो–जागो और हिम्मत कर अपनी निद्रा त्यागो,
झूठ, नफरत, वैमनस्य और जहर फैलाने वालों से उत्तर तो मांगो,
धज्जियां उड़ा दो इन नफरती सौदागरों के दुस्साहस की,
झलक तो दिखला दो इन्हें हिन्दुस्तानी शौर्य और साहस की,
अन्यथा देश में केवल द्वेष ही रह जाएगा,
चुनिंदा चापलूस ऐश करेंगे और आम आदमी, बस पिस्ता जाएगा।

आर्थिक अनुदान की अपील

आपको यह जानकर अति प्रसन्नता होगी कि जाट सभा चंडीगढ़ द्वारा 6 जून 2019 को गांव कोटली बाजालान-नोमैई कटरा जम्मु में जी टी रोड़ पर 10 कनाल भूमि की भू-स्वामी श्री संतोष कुमार पुत्र श्री बदरी नाथ निवासी गांव कोटली बाजालान, कटरा, जिला रियासी (जम्मु) के साथ लंबी अवधि के लिए लीज डीड पंजीकृत की गई है। इस भूमि का इंतकाल भी 6 जुलाई 2019 को जाट सभा चंडीगढ़ के नाम दर्ज हो गया है। इस प्रकार इस भूमि पर जाट सभा चंडीगढ़ का पूर्ण स्वामीत्व स्थापित हो चुका है। बिल्ड़िग के मजबूत ढ़ांचे/निर्माण के लिये साईट से मिट्टी परीक्षण करवा लिया गया है और बिल्ड़िंग के नक्शे/ड्राईंग पास करवाने के लिये सम्बन्धित विभाग में जमा करवा दिये गये है। इसके अलावा जम्मु प्रशासन व माता वैष्णों देवी साईन बोर्ड कटरा को यात्री निवास साईट पर जरूरी मूल भूत सार्वजनिक सेवायें - छोटे बस स्टैड़, टू-व्हीलर सैल्टर, सार्वजनिक शौचालय, वासरूम, पीने के पानी का स्टाल आदि के निर्माण हेतु पत्र लिखकर निवेदन किया गया है। यात्री निवास स्थल पर ब्लॉक विकास एवं पंचायत अधिकारी (बी.डी.पी.ओ.) कटरा द्वारा सरकारी खर्चे से दो महिला एवं पुरूष स्नानघर व शौचालय का निर्माण किया जा चुका है।

यात्री निवास भवन का शिलान्यास व दीन बंधु चौधरी छोटू राम की विशालकाय प्रतिमा का अनावरण 10 फरवरी 2019 को बसंत पंचमी उत्सव एवं दीन बंधु चौधरी छोटूराम की 136वीं जयंती समारोह के दौरान महामहिम राज्यपाल, जम्मु काश्मीर माननीय श्री सत्यपाल मलिक द्वारा तत्कालीन केंद्रीय मंत्री चौधरी बीरेंद्र सिंह, केंद्रीय राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) पीएमओ डा0 जितेंद्र सिंह व जाट सभा के अध्यक्ष एवं हरियाणा के पूर्व पुलिस महानिदेशक डा0 एम एस मलिक, भा0पु0से0 (सेवा निवृत) की उपस्थिति में संपन्न किया गया।

यात्री निवास भवन एक लाख बीस हजार वर्ग फुट में बनाया जाएगा जिसमें फैमिली सुईट सहित 300 कमरे होगें। भवन परिसर में एक मल्टीपर्पज हाल, कांफ्रैंस हाल, डिस्पैंसरी, मैडीकल स्टोर, लाईब्रेरी, बच्चों की प्रतिभा विकास एवं विभिन्न व्यवसायिक व सुरक्षा संबंधी सेवाओं में प्रवेश के लिए कोचिंग की विशेष सुविधाएं उपलब्ध होगीं। सुरक्षा सैनिकों, शहीद परिवारों व उनके आश्रितों के लिए मुफ्त ठहरने तथा माता वैष्णों देवी के श्रद्धालुओं के लिए विशेष सुविधाएं प्रदान की जाएगीं। यात्री निवास के निर्माण के लिये श्री राम कंवर साहु सुपुत्र श्री पूर्ण सिंह, गांव बीबीपुर जिला जीन्द (हरियाणा), वर्तमान निवासी मकान नं0 110 सुभाष नगर, रोहतक द्वारा 5,11,111/- तथा श्री सुखबीर सिंह नांदल, निवासी मकान नं. 426-427, नेमी सागर कालोनी, वैशाली नगर, जयपुर द्वारा 5,01,000 रुपये तथा श्री देशपाल सिंह निवासी मकान न0 990, सैक्टर-3, कुरूक्षेत्र (हरियाणा) द्वारा 5,00,000 रुपये की राशि जाट सभा, चण्डीगढ को दान स्वरूप प्रदान की गई है।

आप सभी से नम्र निवेदन है कि इस कल्याणकारी व पुनित सामाजिक कार्य के लिए स्वेच्छा अनुसार शीघ्र अनुदान देने की कृपा करें ताकि निर्माण कार्य शीघ्र शुरू किया जा सके जोकि आज सभी के सहयोग से ही संम्भव हो सकेगा। यदि कोई दानी सज्जन यात्री निवास में कमरे के निर्माण हेतू 5 लाख रूपये या इससे अधिक की राशि दान देता है तो उसका नाम भवन परिसर में उचित स्थान पर अंकित किया जाएगा और उसे भवन में आजीवन मुफ्त ठहरने की सुविधा प्रदान की जाएगी। जम्मु काश्मीर के भाई-बहन व दानवीर सज्जन इस संबंध में चौधरी छोटु राम सेवा सदन के अध्यक्ष श्री सर्बजीत सिंह जोहल (मो0नं0 9419181946), श्री भगवान सिंह उप प्रधान (मो0नं0 8082151151) व केयर टेकर श्री मनोज कुमार (मो0नं0 9086618135) पर संपर्क कर सकते हैं। यात्री निवास भवन के लिए अनुदान देने वाले सज्जनों का उचित विवरण रखा जाएगा और उनका नाम जाट सभा द्वारा प्रकाशित मासिक पत्रिका 'जाट लहर' में भी प्रकाशित किया जाएगा। भवन निर्माण की अनुदान राशि चैक, डिमांड ड्राफ्ट द्वारा 'जाट सभा चंडीगढ़' के पक्ष में जाट भवन 2-बी, सैक्टर 27-ए, मध्य मार्ग, चंडीगढ़ में भेजी जा सकती है अथवा आर टी जी एस की मार्फ त सीधे जाट सभा के बचत खाता नंबर 50100023714552, आईएफएससी कोड- एचडीएफसी 0001324 में ट्रांसफर की जा सकती है। अनुदान की राशि आयकर अधिनियम की धारा 80-जी के तहत आयकर से मुक्त है।

निवेदक : कार्यकारिणी जाट सभा चंडीगढ़/पंचकुला,
चौधरी छोटू राम सेवा सदन, कटरा, जम्मू

सम्पादक मंडल

सरंक्षक एवं सम्पादक : **डा. एम.एस. मलिक, आई.पी.एस. (सेवानिवृत)**
सह–सम्पादक : डा॰ राजवन्तीमान
साज सज्जा एवं आमुख : श्री आर. के. मलिक
प्रकाशन समिति : श्री बी.एस. गिल, मो॰ : 9888004417
श्री जे.एस. ढिल्लो, मो॰ : 9416282798
वितरक : श्री प्रेम सिंह, कार्यालय सचिव, जाट भवन, चण्डीगढ़

जाट भवन 2–बी, सैक्टर 27–ए, चण्डीगढ़
फोन : 0172-5086180
Email: jat_sabha@yahoo.com; Website: www.jatsabha.org

सर छोटूराम जाट भवन, सैक्टर–6, पंचकूला
फोन : 0172–2590870, Email: jatbhawan6pkl@gmail.com

चौधरी छोटू राम सेवा सदन, कटरा, जम्मू

Postal Registration No. CHD/0107/2021-2023

RNI No. CHABIL/2000/3469

मुद्रक प्रकाशन एवं सरंक्षक सम्पादक डा. एम. एस. मलिक ने जाट सभा, चंडीगढ़ के लिए एसोशियटिड प्रिन्टर्ज़, चंडीगढ़, फोन : 0172–2650168 से मुद्रित करवा कर जाट भवन, 2–बी, मध्यमार्ग, सैक्टर 27–ए, चंडीगढ़ से प्रकाशित किया।